Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا (सूरत अन्निसा आयत :30)

अनुवाद: हे वे लोगो जो ईमान लाए हो अपने माल नाजायज़ तरीक़ा से न खाया करो। हां यदि वह ऐसा व्यापार हो जो आपसी सहमति से हो और तुम अपने आप को कत्ल न करो। नि:सन्देह अल्लाह तुम पर बार बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 5

साप्ताहिक बदर क़ादियान

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

अंक- 49

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक सय्यद मुहियुद्दीन फरीद

24 रबीयुल सानी 1441 हिज्री कमरी 10 फतेह 1399 हिज्री शम्सी 3 दिसम्बर 2020 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

रूहानी पवित्रता चाहने वालों के लिए ज़ाहरी सफाई भी आवश्यक है क्योंकि एक शक्ति का दूसरी पर प्रभाव होता है ।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

आख़िरत के वजूद पर तीन प्रमाण

अल्लाह तआला ने इस ज़माना को समझाने के लिए तीन तरीक़े वर्णन फ़रमाए हैं। एक यह कि इन्सान को अक़्ल दी है कि यदि वह इससे थोड़ा भी काम ले और ध्यान करे। तो यह बात बहुत सफ़ाई से ज़ेहन में आ सकती है कि इन्सान की थोड़ी सी ज़िन्दगी दो शून्यों के मध्य स्थित है। और कभी भी बाक़ी नहीं रह सकती अनुमानों से अप्रत्यक्ष का पता लग सकता है। इन्सान पता कर सकता है जैसे यदि हम ग़ौर करें कि हमारे बाप दादे कहाँ हैं। इस पर ग़ौर करें और सोचें तो मान लेना पड़ेगा कि सबको इसी रास्ता पर चलना होगा। अज्ञान है वह इन्सान जिसके सामने हज़ारों उदाहरण हों और वह उनसे शिक्षा न ले। अक़्ल न सीखे। प्राय देखा गया है और यह एक प्रमाणित बात है कि हर गांव और शहर में ज़िंदों से क़ब्रें अधिक होती हैं। कई छुपी और कई ज़ाहिर होती हैं। कई बार देखा गया है कि जब शहर में कोई कुँआं खोदते हैं। तो उस में से हड्डियां निकलती हैं। प्राय क़ब्रें ही क़ब्रें हर स्थान पर मौजूद हैं। यह एक दूसरी बात है कि वह प्रकट न हों। इससे नश्वर हुए इन्सानों का पता लगता है।

दूसरी एक यह अक़्ली दलील इस ज़माना के वजूद पर मौजूद है कि जिस तरह पर खेत में से हरियाली निकलती है। हरियाली मालूम होती है फिर एक वक़्त आता है कि वह धीरे-धीरे लाल हो कर ख़ुशक होने लगता है। और फिर एक हालत उस पर आती है कि वह गिरने लगता है कि उस वक़्त जब नुक़्सान होने लगता है तो बोने वाला किसान उसको ख़ुद ही काट डालता है ताकि ऐसा न हो कि इसी तरह पर उड़-उड़ ही कर नष्ट हो जाए।

दुनिया ख़ुदा तआला का खेत है। जिस तरह ज़मींदार हिक्मत और अंजाम को देख कर कभी कच्चा ही काट लेता है कभी ज़रा पुख़्ता होता है तो काटता है। इसी तरह से हम भी परवरिश पाकर अल्लाह तआला की इच्छा और इरादे के अनुसार ठीक अपने अपने समय पर काटे जाते हैं। ज़मींदार के कर्म से शिक्षा और इबरत प्राप्त करनी चाहिए कि इन्सान की ज़िन्दगी का भी ठीक यही तरीक़ा है जैसे कई दाने उग भी नहीं पाते बल्कि ज़मीन के अन्दर ही अन्दर नष्ट हो जाते हैं इसी तरह कई बच्चे मां के गर्भ ही से नष्ट हो जाते हैं और कई पैदा होने के कुछ दिन बाद मरते हैं। अत: ठीक उसी क़ानून और कर्म के अनुसार इन्सान, बच्चा, जवान और बूढ़ा होता है और ख़ुदा तआला की इच्छा की दरांती उसे समय समय पर हिक्मत से काटती जाती है कभी बच्चे मरते हैं जिनको कहते हैं कि अठरा (रोग) से मरते हैं। सही शरीर, तन्दरुस्त, जवान भी मरते हैं। उम्र वाले हो कर बूढ़े कमज़ोर होकर भी आख़िर उठ जाते हैं। अत: यह सिलसिला कांट छांट का दुनिया में ऐसा जारी है जो हर क्षण इन्सान को शिक्षा देता है कि दुनिया हमेशा रहने का स्थान नहीं। अत: यह भी एक दलील इस ज़माना की आय पर है।

शेष पृष्ठ 12 पर

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

जब इक़ामत की तकबीर हो तो नमाज़ के लिए दौड़ते हुए न आओ।

इबाया बिन रफ़ाअ रज़ि से रिवायत है कि मैं जुम्अ: को जा रहा था कि मुझे हज़रत अबू अब्बास (अब्दुर्रहमान बिन जुबैर रज़ि अल्लाह अन्हु) आ मिले और उन्होंने कहा मैं ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते सुना है कि जिस के पांव अल्लाह की राह में मिट्टी में मिले हों उस को अल्लाह ने आग पर हराम कर दिया है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहो अन्हु से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना आप फ़रमाते थे: जब इक़ामत की तक़बीर हो तो नमाज़ के लिए दौड़ते हुए न आओ बल्कि आम रफ़्तार से चल कर आओ और तुम सन्तोष को अपनी आदत बनाओ जितनी नमाज़ तुम पा लो पढ़ लो जो तुम से रह जाए उसे पूरा कर लो।

अब्दुल्लाह बिन अबी क़तादा अपने पिता से रिवायत करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जब तक मुझे (उठते) न देखो न उठा करो और तुम्हें चाहिए कि आराम से उठो

(सही बुख़ारी, भाग 2 किताबुल जमा,प्रकाशन क़ादियान 2006 ई)

☆ ☆ ☆ ☆

अल्लाह और उसके रसूल की बातों को हंसी और उपहास के अवसर पर वर्णन करना बहुत ख़तरनाक बात है यह चीज़ दिल को काला कर देती है इस प्रकार का उपहास वही कर सकता है जिस में संजीदगी न हो और जिस में संजीदगी नहीं। न वह धर्म के लिए लाभदायक हो सकता है और न दुनिया के लिए।

अल्लाह तआला ने बनी इस्राईल को यह हुक्म दिया कि तुम حِطَّةٌ (हित्तातुन) कहो अर्थात हे अल्लाह हमारे गुनाह क्षमा कर लेकिन उन्होंने मज़ाक़ में حِنْطَةٌ (हिन्तातुन) कहना शुरू कर दिया अर्थात हमें गेहूं मिल जाए। उनके अंदर गेंहू के गर्म गर्म नानों की लालच पैदा हो गई और उन्होंने (हित्तातुन) को बिगाड़ (हिन्ता-तुन) कहना शुरू कर दिया।

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह अन्हो फ़रमाते हैं

"देखो कितनी छोटी सी बात है परन्तु ख़ुदा तआला के क्रोध का कारण हो गई। इस का कारण यह है कि नेकी में इन्सान केवल संजीदगी के कारण से तरक़्क़ी कर सकता है इन्सान कितनी ही इबादतें करे कितनी ही क़ौमी सेवा करे परन्तु उस के अंदर संजीदगी न हो तो वह कभी भी रुहानी तरक़्क़ी नहीं कर सकता और न क़ौम के लिए सही तौर पर लाभदायक हो सकता है बल्कि ऐसे ग़ैर संजीदा लोग कई बार क़ौम को ख़तरनाक तबाही के गढ़े में धकेल देते हैं ज़ाहिर में (हिन्तातुन) कह देना एक छोटी सी बात मालूम होती है परन्तु यदि ध्यान दो तो निहायत महत्व वाली बात है क्योंकि ख़ुदा तआला के कलाम के साथ उपहास किया गया है इस प्रकार का उपहास वही शख़्स कर सकता है जिसके दिल में संजीदगी न हो और जिसके दिल में संजीदगी न हो वह धर्म के लिए लाभदायक नहीं हो सकता है और न दुनिया के लिए लाभदायक हो सकता है। छोटे छोटे क्रोध के अवसर छोटी छोटी लालच के अवसर पर ऐसे आदमियों को मिल्लत और मुल्क से ग़द्दारी करने पर तत्पर कर देते हैं। आज मुसलमानों की भी यही अवस्था है जो धर्म से विमुखता हैं वह तो धर्म से विमुख हैं ही। परन्तु जो धार्मिक कहलाते

शेष पृष्ठ 11 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ का यूरोप का सफर, सितम्बर अक्तूबर 2019 ई (भाग-27)

कौन है जो ऐसे ताक़तवर, पवित्र और मुख़लिस इन्सान की कोशिशों को रोक सके।

ख़लीफ़ा एक ऐसी हस्ती है कि समस्त ध्यान उन पर स्थापित हो जाता है। बे-शक मुझे उर्दू तो नहीं आती परन्तु फिर भी में एक कान से उनके शब्दों पर ग़ौर कर रहा था ताकि मुझे मालूम हो कि ख़लीफ़ा के शब्द मुझ पर क्या प्रभाव छोड़ते हैं। मुझे यह स्वीकार करना पड़ेगा कि उनकी हस्ती और उनका वजूद ही ऐसा है कि मैंने गवारा ही नहीं किया कि मैं एक लम्हा के लिए इधर से उठकर जाऊं।

(Ulf Daude साहिब जोConsultant of Minister president हैं

आज ख़लीफ़ा की मौजूदगी निहायत ही कशिश वाली महसूस हो रही थी। एक शान्ति उनके व्यक्तित्व से प्रकट होती है और दूसरों पर वह शान्ति प्रभाव डालती है, इस से इन्सान को सन्तोष प्राप्त होता है। ख़लीफ़ा को यदि देखते हैं तो महसूस होता है कि वो एक जाज़िब शख़्सियत हैं।

(Angelika Rubmann साहिबा और उनके पति Karlhermann साहिब

इस आयोजन में मुझे बहुत से लोगों से मिलने का अवसर मिला जो सबके सब बहुत ही प्यार करने वाले थे।

परन्तु आज सबसे प्रभावित और दिल को लुभाने वाली मुझे ख़लीफ़ा की हस्ती लगी। उन्होंने पहले सम्बोधनों को बहुत ही उत्तम रंग में अपने ख़िताब में शामिल किया।

(Melanie Wellendorf साहिबा

इमाम जमाअत अहमदिया की मौजूदगी का माहौल पर एक हैरत करने वाला प्रभाव था और उनके रुहानी प्रभाव के कारण से उनकी तक़रीर का सीधा दिल पर प्रभाव होता था। उन्होंने अपने ख़िताब में औरत के स्थान को बहुत अच्छे रंग में वर्णन किया है और इस से इस्लाम में औरत का स्थान और समाज में औरत के सम्मान प्रकट होता है। वेटक साहिब (Witecke) जो पेशे के दृष्टि से एक वकील हैं।

मैं आप लोगों को ख़ुश-क़िस्मत समझता हूँ कि आपके इस तरह के सम्मान वाले और प्रशंसनीय लीडर हैं जिन को प्रत्येक क्षण अपनी जमाअत की समाजी , अख़लाक़ी और रुहानी तर्बीयत का ध्यान रहता है।

आपके ख़लीफ़ा से एक अजब किस्म की रुहानी कैफ़ीयत प्रकट होती है जिसको महसूस किया जा सकता है परन्तु शब्दों में इसको प्रकट करना संभव नहीं।

(मेयर बावर Bauer) साहिब)

मुझे हुज़ूर का वजूद यूं महसूस हुआ कि आपको दुनिया की कोई भी ताक़त , इस्लाम के अमन के पैग़ाम को फैलाने से, नहीं रोक सकती, आप मज़बूत और सुदृढ़ हैं और आपके तर्कों की बुनियाद इन्सानियत के लिए सच्ची हमदर्दी और इन्सानी क़दरों की स्थापना के लिए नि:स्वार्थ कोशिशों पर है, कौन है जो ऐसे ताक़तवर, पवित्र और मुख़लिस इन्सान की कोशिशों को रोक सके। (Wolfgang Merkmann साहिब)

मस्जिद बैयतुल बसीर महदी आबाद (जर्मनी) के उद्घाटन के अवसर पर हुज़ूर अनवर के ख़िताब के बाद मेहमानों के ईमान वर्धक विचार

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

बाक़ी रिपोर्ट 26 अक्तूबर 2019 ई (दिनांक हफ़्ता)

मेहमानों के विचार

मस्जिद बसीर महदी आबाद के उद्घाटन के हवाला से आज के आयोजन में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के ख़िताब ने शामिल होने वाले मेहमानों पर गहरे छाप छोड़े। बहुत से मेहमानों ने अपने विचारों का इज़हार भी किया। कुछ मेहमानों के विचार ये हैं:

Guido Gerdemann साहिब अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहते हैं :आज का प्रोग्राम मुझे बहुत ही अच्छा लगा। सम्मान्नीय का ख़िताब भी मुझे बहुत अच्छा लगा क्योंकि उन्होंने वही Values वर्णन कीं जो हम सबको अपनानी चाहिऐं। आजकल तो यह इक़दार बहुत महत्त्वपूर्ण रखती हैं कि बराबरी से व्यवहार किया जाए और अमन से रहा जाए। इमाम जमाअत अहमदिया का व्यक्तित्व मुझे बहुत ही प्यार और अमन वाला लगा।

एक मेहमान Jan Eders साहिब अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहते हैं :मुझे आज का आयोजन बहुत ही दिलचस्प लगा क्योंकि पहली बार मैं एक ऐसे आयोजन में शामिल हुआ हूँ। ख़लीफ़ा के ख़िताब में मुझे जो बात बहुत अच्छी लगी वह यह थी कि उन्होंने पहले सम्बोधन करने वालों की बातों को भी अपने ख़िताब में शामिल किया।

Steffan Murdig साहिब कहते हैं मुझे इमाम जमाअत का व्यक्तित्व बहुत कशिश वाला लगा। उनकी बातों से मुझे पूर्ण तौर पर सहमति है। खासतौर पर मुझे वह बात पसन्द आई जो उन्होंने इन्सानी क़दरों के बारे में वर्णन की थी क्योंकि यह ऐसी बात है जो हर इन्सान के लिए महत्त्वपूर्ण है।

एक मेहमान Ulf Daude साहिब जो Consultant of Minister president हैं वह कहते हैं :ख़लीफ़ा का ख़िताब बहुत शानदार था। एक बात जो उनके ख़िताब में मुझे बहुत ही उत्तम लगी वह यह थी कि उन्होंने ऐसे पहलू वर्णन किए जो समस्त धर्मों में सहमति पैदा करने वाले हैं। मैं तो एक ईसाई चर्च का मेंबर हूँ और बावजूद इसके कि हमारे इबादत के तरीक़े और आपके धर्म में बहुत सी बातें ऐसी हैं जिनका आपस में मतभेद होगा परन्तु फिर भी इमाम जमाअत ने ऐसे पहलू वर्णन किए जिन का हर कोई समर्थन कर सकता है। मेरा तो यह ईमान है कि हम सब का एक ही ख़ुदा के बन्दे हैं, केवल इबादत के तरीक़े विभिन्न हैं।

महोदय और अधिक कहते हैं कि ख़लीफ़ा एक ऐसी हस्ती है कि समस्त ध्यान उन पर स्थापित हो जाता है। बे-शक मुझे उर्दू तो नहीं आती परन्तु फिर भी में एक कान से उनके शब्दों पर ग़ौर कर रहा था ताकि मुझे मालूम हो कि ख़लीफ़ा के शब्द मुझ पर क्या असर छोड़ते हैं। मुझे यह स्वीकार करना पड़ेगा कि उनकी हस्ती और उनका वजूद ही ऐसा है कि मैंने सहन ही नहीं किया कि मैं एक क्षण के लिए इधर से उठकर जाऊं।

आयोजन में शामिल एक मेहमान औरत Barbera Gunther साहिबा कहती हैं :जब मैंने पहली बार ख़लीफ़ा को देखा तो मुझे अक़ीदत महसूस हुई और यह एहसास हुआ कि वह निहायत ही सम्मान योग्य हैं। ख़लीफ़ा के ख़िताब में एक बात बहुत पसन्द आई जो हम सबको सम्मुख रखनी चाहीए और उस पर अनुकरण भी करना चाहीए वो यह है कि हमें इन बातों पर ग़ौर करना चाहिए जो भाईचारा पैदा करने वाली हों और इस तरह से एकता पैदा होगी।

एक मेहमान Kai Vogel साहिब जिनका सम्बन्ध लोकल असेंबली से है अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहते हैं :मुझे आज इस प्रोग्राम में शामिल होकर बहुत ख़ुशी हुई क्योंकि इस मस्जिद का उद्घाटन केवल् जमाअत अहमदिया के मेंबरों के लिए ही नहीं बल्कि इस क्षेत्र के लिए भी एक बहुत ख़ुशी का अवसर है। जब ख़लीफ़ा को देखते हैं तो फ़ौरन स्पष्ट होता है कि वह एक निहायत ही प्रमुख व्यक्तित्व हैं। मेरे निकट जैसे पोप कैथोलिक का ईसाईयों में स्थान है इसी तरह ख़लीफ़ा का स्थान आपकी जमाअत के लिए होगा। मेरे लिए भी एक बहुत बड़ा सम्मान था कि मुझे एक ऐसी व्यक्तित्व से बात करने का अवसर मिला और मुझे यह मुलाक़ात बहुत ही बरकत वाली महसूस हुई। फिर ख़लीफ़ा के ख़िताब में मुझे यह बहुत अहम लगा कि हम सबको जो दूसरे के बारे में शंकाएं हैं वे ख़त्म करनी

शेष पृष्ठ 10 पर

ख़ुत्बः जुमअः

लोगों में से मेरे नज़दीक वे हैं जो मुत्तक़ी हैं चाहे वे कोई हों और कहीं भी हों। (अल-हदीस)

रुत मआज़ रज़ि से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब उन्हें यमन भेजा तो आपने फ़रमाया आराम तथा सुविधा वाली ज़िन्दगी धारण करने से बचोगे क्योंकि अल्लाह तआला के बंदे आराम तथा सुविधा वाली ज़िन्दगी धारण नहीं करते।

मिलादुन्नबी (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) मनाने की असल चीज़ तो यह है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श और आप की नसीहतों पर अनुकरण किया जाए।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के महान बदरी सहाबा क़ुरआन के क़ारी, अल्लाह के रसूल के महबूब, इल्म तथा धर्म वाले, हज़रत मआज़ बिन जबल और उहद के पहले शहीद हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमरो रज़ि अल्लाह तआला अन्हुमा के प्रशंसनीय गुणों का वर्णन।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 30 अक्तूबर 2020 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक़ इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ۔

أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

पिछ्ले ख़ुत्बा में हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि का वर्णन चल रहा था जो आज भी जारी है। हज़रत मआज़ रज़ि बहुत दानी थे और ख़ूब ख़र्च करने वाले थे जिस के कारण से प्राय उन्हें क़र्ज़ भी लेना पड़ता था। जब क़र्ज़ मांगने वालों ने अधिक तंग किया तो कुछ दिन घर में छिप कर बैठे रहे तो वे लोग आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए और हज़रत मआज़ रज़ि से क़र्ज़ दिलवाने का निवेदन किया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत मआज़ रज़ि को आदमी भेज कर बुलवाया। जब हज़रत मआज़ रज़ि की जायदाद से क़र्ज़ अधिक हो गया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो व्यक्ति अपना हिस्सा न लेगा ख़ुदा उस पर रहम करेगा। अत: कुछ लोगों ने अपना क़र्ज़ माफ़ कर दिया परन्तु फिर भी कुछ लोग क़र्ज़ की वापसी करते रहे तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सारी जायदाद को उन लोगों में बंट दिया परन्तु अभी भी क़र्ज़ सम्पूर्ण अदा न हुआ बल्कि यह हुआ कि हर एक को क़र्ज़ का कुछ हिस्सा मिल गया। क़र्ज़- मांगने वालों ने और अधिक की मांग की कि बक़ाया भी हमें दिया जाए तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उन्हें छोड़ दो। अभी इस से अधिक नहीं मिल सकता। इसी माल को ले जाओ। जब हज़रत मआज़ रज़ि के पास कुछ भी बाक़ी न रहा तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें यमन की तरफ़ भेजा और फ़रमाया कि क़रीब है कि अल्लाह तआला तुम्हारा नुक़्सान पूरा करे और तुम्हारा क़र्ज़ अदा करा दे।

(उद्धरित सैरुस्सहाब: भाग 3 पृष्ठ 502 मुआज़ बिन जबल रज़ि प्रकाशक दारुल-इशाअत कराची)

(उसदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 5 पृष्ठ 188 मुआज़ बिन जबल दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत लबनान 2003 ई)

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न सअद भाग 3 पृष्ठ 441-440 मुआज़ बिन जबल व मन सबदा आइआयर बनी सलम दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत लबनान 1990 ई)

इस अवसर पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत मआज़ रज़ि को यह भी फ़रमाया कि हे मुआज़ तुम पर क़र्ज़ बहुत है। अगर कोई तोहफा लाए तो उसे क़बूल कर लेना। मैं तुम्हें इस की आज्ञा देता हूँ। (बहवाला सैरुल्लहाबा भाग 5 पृष्ठ 146 दारुल-इशाअत लाहौर) आप ने फ़रमाया तोहफ़े स्वीकार करने की तुम्हें आज्ञा है। अर्थात तोहफ़ा स्वीकार करना तो वैसे कोई आपत्ति नहीं। यही कहा जाता है कि मुहब्बत बढ़ती है। एक दूसरे को तोहफ़े देने चाहिऐं परन्तु यह क्योंकि वहां आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रतिनिधि बना के भेजे गए थे इसलिए आप ने खासतौर पर फ़रमाया कि इस प्रतिनिधित्तव के कारण से अगर तुम्हें लोग तोहफ़ा दें तो तुम्हें अधिकार है कि वह तोहफ़ा तुम अपने पर ख़र्च कर सकते हो क्योंकि वह प्राय बैयतुल माल के लिए या आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए दिया जाता था।

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें यमन की तरफ़ भेजा तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उन्हें नसीहत करने के लिए उनके साथ बाहर तशरीफ़ ले गए। हज़रत मआज़ रज़ि सवारी पर बैठे हुए थे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनकी सवारी के साथ पैदल चल रहे थे। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बात पूरी कर चुके तो फ़रमाया हे मुआज़ संभव है कि अगले साल तुम्हारी मुझसे मुलाक़ात न हो और यह भी मुम्किन है कि तुम मेरी मस्जिद और मेरी क़ब्र के पास से गुज़रो। हज़रत मुआज़ आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से जुदाई के कारण से यह सुनकर ज़ोर ज़ोर से रोने लगे। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपना चेहरा तबदील किया और मदीना की तरफ़ मुँह मुबारक कर के फ़रमाया:लोगों में से मेरे निकट वे हैं जो मुत्तक़ी हैं चाहे वे कोई हों और कहीं भी हों।

(उद्धरित मस्नद अहमद बिन हंबल मस्नद मुआज़ बिन जबल भाग 7 पृष्ठ 359 हदीस 22402 आलेमुल कुतुब बेरूत 1998 ई)

एक रिवायत में है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत मुआज़ रज़ि को इस अवसर पर फ़रमाया तुम शीघ्र ऐसे लोगों के पास जाओगे जो अहले किताब हैं। जब तुम उनके पास पहुँचो तो उन्हें इस बात की दावत दो कि वे गवाही दें कि अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं। अगर वे तुम्हारी यह बात मान लें तो फिर उन्हें यह बताओ कि अल्लाह ने उन पर हर दिन रात में पाँच नमाज़ें निर्धारित की हैं अगर वे तुम्हारी बात मान लें तो फिर उन्हें यह बताओ कि अल्लाह ने उन पर सदक़ा निर्धारित किया है जो उनके दौलतमंदों से लिया जाए और उनके ज़रूरत वालों को लौटा दिया जाए। फिर अगर वे तुम्हारी यह बात भी मान लें तो ख़बरदार उनके उम्दा उम्दा माल सदक़े में न लेना बल्कि मध्य स्तर के लेना और पीड़ित की पुकार से बचना इसलिए कि उसके और अल्लाह के मध्य कोई रोक होती।

(सही अल-बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी बाब बअस अबी मूसा व मआज़ अला यमन.....हदीस 4347)

पीड़ित की आह से बचने की विशेष रूप से नसीहत फ़रमाई क्योंकि उस की आह और अल्लाह के बीच कोई रोक नहीं होती।

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यमन की तरफ़ क़ाज़ी बना कर भेजा। आप उन लोगों को क़ुरआन और धर्म सिखाते थे। उनके मध्य फ़ैसले करते थे। यमन के आमिलीन जो ज़कात इकट्ठी करते थे वह हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि के पास भिजवाते थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यमन का प्रबन्ध पाँच सहाबा हज़रत ख़ालिद बिन सईद रज़ि, हज़रत मुहाजिर बिन उमय्यह रज़ि, हज़रत ज़ैद बिन लबीद रज़ि , हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि और हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि में बांटा था।

(अल्इस्तियाब भाग 3 पृष्ठ 460 मुआज़ बिन जबल। दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत 2010 ई)

अर्थात इंतिज़ाम इन पाँच के सपुर्द थे। यह एक रिवायत है।

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि वर्णन करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब मुझे यमन की तरफ़ भेजा तो इरशाद फ़रमाया कि हर तीस गाय

में ज़कात के तौर पर एक साल की गाय लेना और हर चालीस गाय पर दो साल की अर्थात ज़कात का प्रतिशत बयान फ़र्मा रहे हैं, निसाब वर्णन फ़र्मा रहे हैं और हर व्यस्क से एक दीनार या उस की क़ीमत के बराबर मआफ़िर यानी एक यमनी कपड़ा होता है वह वसूल करना। मआफ़िर एक क़बीले का नाम था जो यह कपड़ा बनाते थे। इन्हीं के नाम पर उस का नाम भी हो गया। यह मस्नद अहमद बिन हंबल की रिवायत है।

(मस्नद अहमद बिन हंबल भाग 7 पृष्ठ 348 मस्नद मुआज़ बिन जबल हदीस 22363 आलेमुल कुतुब बेरूत 1998 ई)

(लुग़ातुल हदीस भाग 3 पृष्ठ 142 पीर मुहम्मद कुतुब ख़ाना आराम बाग़ कराची)

अल्लामा इब्ने सअद कहते हैं कि हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि के पांव में लंगड़ाहट थी। जब वह यमन गए तो उन्होंने लोगों को नमाज़ पढ़ाई और अपना पांव फैला दिया अर्थात टांग आगे कर ली या दाएं तरफ़ फैला दी होगी जिस तरह भी उनकी सूरत थी तो जो भी पांव ख़राब था लोगों ने भी उसी तरह उस तरफ़ अपने पांव फैला दिए। हज़रत मआज़ रज़ि ने जब नमाज़ पढ़ा ली तो कहा तुम लोगों ने अच्छा किया कि जिस तरह मैं कर रहा था तुम ने किया परन्तु आगे ऐसा न करना क्योंकि मुझे तकलीफ़ है इसलिए मैंने नमाज़ में अपना पांव फैलाया था।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न सअद भाग 3 पृष्ठ 439 मुआज़ बिन जबल। दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत 1990 ई)

अभिप्राय यह था कि मुझे देख के तुमने इताअत का जो नमूना दिखाया वह हर दृष्टि से ही प्रशंसा के योग्य है। आज्ञापालन इसी तरह होना चाहिए कि इमाम के पीछे सम्पूर्ण रूप से इस की पैरवी की जाए परन्तु मेरी यह मजबूरी है। यह सुन्नत नहीं है और जिस को मजबूरी नहीं वह सही तरह नमाज़ पढ़े। इसी तरह जिस तरह हुक्म है, जिस तरह सुन्नत है, जिस तरह हमारे सामने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का कर्म रहा है। हज़रत मआज़ रज़ि ने यमन में बैयतुल माल के पैसों से व्यापार किया और उस से जो मुनाफ़ा हुआ उस से अपना क़र्ज़ अदा किया। आप पहले शख़्स हैं जिन्हों ने अल्लाह तआला के माल से तिजारत की और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आज्ञा से तोहफा भी स्वीकार करते रहे और यहां तक कि आपके पास तीस भेड़ बकरियां हो गईं।

(उद्धरित सैरुस्सहाब: भाग 3 पृष्ठ 505 हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि प्रकाशक दारुल-इशाअत कराची) (अल्इस्तेयाब भाग 3 पृष्ठ 1404 मुआज़ बिन जबल प्रकाशक दारुल जेल बेरूत 1992 ई)

यह आज्ञा जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें दी थी अवश्य क़र्ज़ की अदायगी के लिए थी और व्यापार इस सीमा तक था कि जो मुनाफ़ा होता था उस माल में से कुछ क़र्ज़ उतारते जाते थे या मुनाफ़ा यदि नहीं भी लेते थे तो यह भी मुम्किन है कि व्यापार पर जो लाभ था इस में अपने काम के बदला के तौर पर लेते हों कि यह मैंने इस तरह ख़र्च किया। जो मेरा परामर्श था और जो मेहनत थी उस का यह बदला है और इस की आज्ञा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने प्रदान फ़रमाई थी इस लिए फिर उन्होंने यह ले लिया ताकि क़र्ज़ अदा हो और यही बात स्वीकार योग्य लगती है कि मुनाफ़ा के प्रतिशत में से बदला लेते हों या कुछ सीमा तक मुनाफ़ा लेते हों परन्तु बहरहाल जो भी था वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आज्ञा से था।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद जब हज़रत मआज़ रज़ि हज करने आए तो वह हज़रत उमर रज़ि से मिले जिन्हें हज़रत अबू बकर रज़ि ने हज पर आमिल बनाया था। हज़रत उमर रज़ि और हज़रत मआज़ रज़ि की यौ अत्तरवीह् को मुलाक़ात हुई। दोनों आपस में गले मिले और एक दूसरे से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ताज़ियत की। फिर दोनों ज़मीन पर बैठ कर बातें करने लगे।

(अत्तबकातुल कुब्रा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 441 मआज़ बिन जबल व मन सावर बनी सलम। दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

अल्इस्तियाब में लिखा है, यह भी तारीख़ की एक किताब है ,कि हज़रत मआज़ रज़ि बहुत दानी थे और इसी दानशीलता और दान के कारण से यह अवस्था आ गई कि उनका सारा माल कर्ज़े की लपेट में आ गया। वह नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए और आप से दरख़ास्त की कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क़र्ज़ मांगने वालों से कहें कि वे उनका क़र्ज़ माफ़ कर दें। पहले भी यह वर्णन हुआ है। यह विभिन्न हवाले से दूसरी या वही बात वर्णन हो रही है। आप ने उनके क़र्ज़ मांगने वालों से कहा परन्तु उन्होंने क़र्ज़ माफ़ करने से इन्कार कर दिया। फिर आगे उसने यह लिखा है कि अगर कोई किसी के लिए किसी का क़र्ज़ माफ़ करता तो वे लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि का क़र्ज़ माफ़ कर देते। सबसे बड़ा तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का स्थान था आपके लिए ही कोई अपने क़र्ज़ को माफ़ कर सकता था या माली क़ुर्बानी दे सकता था। परन्तु इस में से भी बहुत सारा जैसा कि पहले वर्णन हो चुका है कुछ लोगों ने माफ़ नहीं किया और यही निवेदन किया कि हे रसूलुल्लाह ! हम तो क़र्ज़ा वापस लेंगे। बहरहाल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फिर क़र्ज़ की अदायगी के लिए हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि की जायदाद इत्यादि सब बेच दी और हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि ख़ाली हाथ रह गए। फिर जिस साल मक्का फ़तह हुआ तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत मआज़ रज़ि को यमन के एक हिस्से का अमीर बना कर भेजा। यहां बात और अधिक स्पष्ट हो जाती है कि अमीर बना के भेजा था। इसलिए तोहफा इत्यादि जो था, जो बतौर अमीर उन को मिलता था वह यही ख़्याल किया जाता है कि बैयतुल माल का होगा। वह पहले व्यक्ति थे जिन्हों ने अल्लाह के माल में, बैयतुल माल के माल में व्यापार किया। वह वहां रहे यहां तक कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात हो गई और वह ख़ुशहाल हो गए। इस समय में व्यापार में उनको फ़ायदा होता रहा और वह जितना भी हिस्सा लेते थे, लेते रहे तो ख़ुशहाली हो गई। फिर जब वह वापस आए तो हज़रत उमर रज़ि ने हज़रत अबू बकर रज़ि से कहा कि उस शख़्स को अर्थात हज़रत मआज़ रज़ि को बुलवाएँ और उस के पास उस की ज़रूरत का सामान छोड़कर उस से वसूल कर लें। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़र्ज़ की अदायगी की आज्ञा दी थी। अब क़र्ज़ की अदायगी हो गई और जो ज़रूरत के लिए एक इन्सान को चीज़ें चाहिऐं वह भी उनके पास रहनी चाहिऐं परन्तु यह जो ख़ुशहाली हुई है यह हज़रत उमर रज़ि के ख़्याल में नहीं होनी चाहिए थी। इसलिए यह माल छोड़ के बाक़ी जो है वसूल कर लें। अब हज़रत अबू बकर रज़ि के पास ये मामला आया। हज़रत अबू बकर रज़ि को जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इशक़ था उनको ये बर्दाश्त नहीं था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने किसी चीज़ की आज्ञा दी हो और मैं इस में इस के ख़िलाफ़ कोई फ़ैसला करूँ तो बहरहाल हज़रत अबू बकर रज़ि ने कहा कि इस को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भेजा था और मैं इस से कुछ नहीं लूँगा और यह कह के भेजा था कि तुम व्यापार कर सकते हो और कुछ हिस्सा ले सकते हो यहां तक कि वह ख़ुद मुझे दे दें। मैं ने तो नहीं माँगना। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशाद पर गए थे और यह आज्ञा से जो भी तोहफा और बाक़ी चीज़ें लेते थे तो सिवाए उस के कि मुझे ख़ुद दे दें मैं ने नहीं कहना। हज़रत उमर रज़ि फिर हज़रत मआज़ रज़ि के पास गए। हज़रत उमर रज़ि भी कुछ उसूलों के बड़े पक्के थे। वह हज़रत मआज़ रज़ि के पास गए और हज़रत मआज़ रज़ि से वर्णन किया। हज़रत मआज़ रज़ि ने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे उस की तरफ़ इसलिए भेजा था ताकि कि मेरी ज़रूरत पूरी हो और मैं तो कुछ भी नहीं दूँगा। और यह रिवायतों से भी और उनकी ज़िनद्गी के सारे समय और सीरत से भी प्रमाणित है कि अगर तो उनके पास ख़ुशहाली भी थी तो कुछ दिन के लिए होती होगी क्योंकि प्राय वे लोगों में बांट दिया करते थे। कुछ ऐसी रिवायतें आगे आयेंगी जिनसे पता लगता है कि किस तरह वह बाँटा करते थे। फिर इस के बाद हज़रत मआज़ रज़ि हज़रत उमर रज़ि के पास गए और कहा कि मैं आपकी बात मानता हूँ। पहले तो हज़रत उमर रज़ि को कह दिया मैं कुछ नहीं दूँगा और फिर कुछ समय के बाद या कुछ समय के हज़रत उमर रज़ि के पास गए और कहा अच्छा मैं आपकी बात मानता हूँ और मैं वही करूँगा जिस का आपने कहा है क्योंकि मैंने ख़्वाब देखी है, (कुछ समय के बाद ही गए होंगे क्योंकि यहां ख़्वाब का वर्णन है।) कहते हैं मैंने ख़्वाब देखी है कि पानी में डूब रहा हूँ और आप ने अर्थात हज़रत उमर रज़ि ने मुझे बचाया है। इस के बाद हज़रत मआज़ रज़ि हज़रत अबू बकर रज़ि की सेवा में आए और सारी बात उनसे वर्णन की और कसम खा कर कहा कि मैं आप से किसी चीज़ को भी नहीं छुपाऊँगा जो मैंने लिया जिस तरह लिया सब कुछ मेरे सामने है। हज़रत अबू बकर रज़ि ने कहा कि मैं आप से कुछ भी नहीं लूँगा। ठीक है आपने अपना सारा कुछ हिसाब किताब मुझे बता दिया परन्तु मैं कुछ नहीं लूँगा। मैं ने तुम्हें वो सब तोहफा दिया। तोहफ़ा के तौर पर तुम्हें दे दिया है। हज़रत उमर रज़ि ने कहा यह बेहतरीन हल है।

(उद्धरित अल्इस्तेयाब भाग 3 पृष्ठ 461 बाब हर्फ़ अल मीम मुआज़ बिन जबल दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत 2010 ई)

हज़रत उमर रज़ि भी साथ थे। जब यह बात उनको पता लगी कि जो कुछ है वह ख़ुद हज़रत मआज़ रज़ि को दे रहे हैं तो हज़रत उमर रज़ि ने कहा कि हाँ यह ठीक

है अब क्योंकि वक़्त के ख़लीफ़ा ने फ़ैसला कर दिया है तो सम्पूर्ण इताअत के साथ उसको स्वीकार कर लिया। उनको इस से उद्देश्य नहीं थी कि क्यों लिया जा रहा है। उनको यह था कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के देहान्त के बाद अब यह वक़्त के ख़लीफ़ा का फ़ैसला होना चाहिए कि यह ख़र्च कर सकते हैं या नहीं या अपने पास माल रख सकते हैं या नहीं रख सकते। पहले हज़रत उमर रज़ि ज़ोर देते रहे कि लेना चाहिए परन्तु जब हज़रत अबू बकर रज़ि ने फ़ैसला कर दिया कि मैं नहीं लूँगा और मैं तोहफ़ा के तौर पर दे रहा हूँ तो फिर हज़रत उमर रज़ि के पास कोई बहाना नहीं था। ख़ामोशी से कहा बिल्कुल ठीक है। यह फ़ैसला इस सारे मामले का बेहतरीन हल है। यहां और अधिक स्पष्टता हो गई कि अल्लाह तआला ने भी उस वक़्त तक उन्हें इस तरफ़ ध्यान नहीं दिलाया जब तक हज़रत मआज़ रज़ि की ज़रूरत पूरी नहीं हो गई और जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात भी हो गई और उनकी ज़रूरत भी पूरी हो गई,आसानियां भी पैदा हो गई, कर्ज़े भी उतर गए तो ख़्वाब के द्वारा ख़ुद ही अल्लाह तआला ने हज़रत मआज़ रज़ि को इस तरफ़ ध्यान दिला दिया कि अब नहीं। अब अपनी जायदाद पर ही गुज़ारा करो। अब न वह तोहफा बहैसीयत अमीर के तुम ले सकते हो न बैयतुल-माल में से ख़र्च कर सकते हो और इसके बाद वह अधिक अरसा वहां रहे भी नहीं। बहरहाल यह इस का संक्षिप्त वर्णन है।

हज़रत मआज़ रज़ि से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब उन्हें यमन की तरफ़ भेजा तो फ़रमाया जब तुम्हें कोई मामला सम्मुख होगा तो तुम कैसे फ़ैसला करोगे? उन्होंने निवेदन किया कि मैं अल्लाह की किताब से फ़ैसला करूँगा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अगर अल्लाह की किताब में उस का आदेश न मिला तो? उन्होंने निवेदन किया। फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत के अनुसार फ़ैसला करूँगा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यदि अल्लाह के रसूल की सुन्नत में भी इस का हुक्म न मिला तो ? उन्होंने निवेदन किया कि मैं फिर इज्तिहाद से अपनी राय स्थापित करूँगा और मैं इस में कोई कोताही नहीं करूँगा। मुआज़ ने वर्णन किया कि यह बातें सुनकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फिर मेरे सीने पर हाथ मारा। फिर फ़रमाया कि सब प्रशंसाएं अल्लाह के लिए हैं जिस ने अल्लाह के रसूल के क़ासिद को ऐसी बात की तौफ़ीक़ दी जो अल्लाह के रसूल की प्रसन्नता का कारण हुई।

(मस्नद अहमद बिन हंबल मस्नद मुआज़ बिन जबल भाग 7 पृष्ठ 347 हदीस 22357 आलेमुल कुतुब बेरूत1998 ई)

हज़रत मआज़ रज़ि से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब उन्हें यमन भेजा तो आप ने फ़रमाया आराम तथा सुविधा वाली ज़िन्दगी धारण करने से बचोगे क्योंकि अल्लाह के बंदे आराम तथा सुविधा वाली ज़िन्दगी धारण नहीं करते। (मस्नद अहमद बिन हंबल मस्नद मुआज़ बिन जबल भाग 7 पृष्ठ 375 हदीस 22456 आलेमुल कुतुब बेरूत 1998 ई)

इस से इस बात की भी और अधिक स्पष्टता हो गई कि जो तोहफे और व्यापार का माल था वह कर्ज़ों की अदायगी के लिए था और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पता था कि उनका हाथ खुला है। ग़रीबों की मदद करने वाले हैं इसी पर ख़र्च करेंगे परन्तु फिर भी यह नसीहत कर दी कि ये आज्ञा मैं तुम्हें दे रहा हूँ इसलिए नहीं कि आराम वाली ज़िन्दगी गुज़ारो बल्कि इसलिए कि तुम्हारी ज़रूरतें पूरी हों। इस से बचने की नसीहत फ़रमाई।

हज़रत मआज़ रज़ि बयान करते हैं कि यमन की तरफ़ रवाना होने के लिए जब मैंने रिकाब में अपना पांव रखा तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे आख़िरी नसीहत यह फ़रमाई कि लोगों के साथ अच्छे आचरण से पेश आना। लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करना।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न सअद भाग 3 पृष्ठ 439 "मुआज़ बिन जबल" वु मन सावर बनी सलम, दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत लबनान 1990 ई)

आजकल के मुसलमानों का हाल देखें कि क्या वह इसी तरह पेश आते हैं और मना रहे हैं सीरतुन्नबी की मीलादुन्नबी (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) मीलादुन्नबी (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) मनाने की असल चीज़ तो यह है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श और आप की नसीहतों पर अनुकरण किया जाए।

जब हज़रत मआज़ रज़ि को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यमन पर हाकिम बना कर भेजा तो उनके रुत्बा को इन शब्दों में वर्णन फ़रमाया कि اِنِّیْ بَعَثْتُ لَکُمْ خَیْرَ اَھْلِی कि मैं अपने लोगों में से बेहतरीन को तुम्हारे लिए भेजता हूँ।

(उद्धरित सैरुस्सहाब: भाग 3 पृष्ठ 502 हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ि प्रकाशक दारुल-इशाअत कराची)

इब्ने अबू नजीह रज़ि रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत मआज़ रज़ि को यमन वालों की तरफ़ हाकिम बना कर भेजा और यमन वालों को तहरीर फ़रमाया कि यक़ीनन मैंने तुम पर अपने लोगों में से बेहतरीन इल्म वाले और धर्म वाले व्यक्ति को हाकिम बनाया है।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न सअद भाग 3 पृष्ठ 438-439 मुआज़ बिन जबल व मन सावर बनी सलम दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत लबनान 1990 ई)

एक हदीस में आता है, यह रिवायत मस्नद अहमद बिन हंबल की है। हज़रत मुआज़ रज़ि अल्लाह तआला अन्हो रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे दस बातों की वसीयत करते हुए फ़रमाया। पहली बात यह कि अल्लाह तआला के साथ किसी को साझा नहीं ठहराना चाहे तुम क़तल कर दिए जाओ या जला दिए जाओ। दूसरी बात यह कि माता पिता की ना-फ़रमानी न करो चाहे वे तुम्हें घर-बार और माल से बेदखल कर दें। माता पिता की ना-फ़रमानी नहीं करनी चाहे कुछ भी हो जाए कुछ भी उनसे न मिले। फिर तीसरी बात यह फ़रमाई कि फ़र्ज़ नमाज़ जान-बूझ कर न छोड़ो क्योंकि जान-बूझ कर फ़र्ज़ नमाज़ छोड़ने वाला अल्लाह तआला की ज़िम्मेदारी और हिफ़ाज़त से बाहर निकल जाता है। फिर फ़रमाया शराब न पियो क्योंकि शराब प्रत्येक निर्लज्जता की जड़ है। फिर फ़रमाया गुनाह और ना-फ़रमानी से बचोगे क्योंकि गुनाह की कारण से ख़ुदा की नाराज़गी नाज़िल होती है। फिर फ़रमाया दुश्मन से मुठभेड़ के वक़्त फ़रार न हो जाओ। अगर दुश्मन से आमना सामना हो जाए तो फिर डर के दौड़ नहीं जाना चाहे लोग हलाक हो जाएं। फिर फ़रमाया अगर लोग ताऊन जैसी महामारी का शिकार हो जाएं और तुम उनके मध्य हो तो अपनी जगह पर ही रहो। ताऊन की बीमारी यदि फैलती है, कोई भी ऐसी महामारी फैलती है जो वसीअ तौर पर फैलने वाली है तो फिर अगर तुम बीमारी के इलाक़े में हो तो जहां हो वहीं रहो। फिर फ़रमाया कि अपने घर वालों पर अपनी ताक़त के अनुसार ख़र्च करो। जितनी ताक़त है उतना उन पर ख़र्च करो, उनके हक़ अदा करो और उनकी तर्बीयत में कोताही न करो। फिर उनकी तर्बीयत सही तरह करो और कहीं थोड़ी बहुत सख़्ती भी करनी पड़े तो वह भी करो ताकि उनकी सही तर्बीयत हो और उन्हें ख़ुदा का ख़ौफ़ याद दिलाते रहो। ये दस बातें हैं जो आपने उनको फ़रमाईं।

(मस्नद इमाम अहमद बिन हंबल भाग 7 पृष्ठ 366 मस्नद मुआज़ बिन जबल हदीस 22425 आलेमुल कुतुब बेरूत 1998 ई)

हज़रत इब्ने उम्र से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत मआज़ रज़ि से फ़रमाया हे मुआज़ मैं तुम्हें दयालु भाई की नसीहत जैसी नसीहत करता हूँ। यह रिवायत इब्ने उम्र से है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह फ़रमाया कि मैं तुम्हें अल्लाह का तक़्वा धारण करने की नसीहत करता हूँ। मरीज़ की इयादत करने की नसीहत करता हूँ। बेवाओं और कमज़ोरों की ज़रूरतें पूरी करने की नसीहत करता हूँ। ज़रूरत वालों और मिस्कीनों के साथ बैठने और लोगों को अपनी तरफ़ से इन्साफ़ प्रदान करने और हक़ बात कहने और इस बात की तुम्हें नसीहत करता हूँ कि अल्लाह के मामले में किसी बुरा भला कहने वाले की मलामत तुम्हारे आड़े न आए।

(कन्ज़ुल आमाल भाग 15 पृष्ठ 903 हदीस 43555 किताबुल मवाइज़... अलफ़सल अस्सादिस मूसस अर्रसाला बेरूत 1985 ई)

हज़रत उमर रज़ि ने एक बार अपने साथियों से कहा: किसी चीज़ की इच्छा करो। किसी ने कहा मेरी इच्छा है कि यह घर सोने से भर जाए और मैं उसे अल्लाह की राह में ख़र्च करूँ और सदक़ा कर दूं। एक व्यक्ति ने कहा मेरी इच्छा है कि यह मकान हीरे जवाहरात से भर जाए और मैं इस को अल्लाह तआला की राह में ख़र्च करूँ और सदक़ा कर दूं। सहाबा की कैसी अजीब और महान इच्छाएं थीं। फिर हज़रत उमर रज़ि ने कहा और इच्छा करो। उन्होंने कहा हे अमीरुल मोमनीन हमें समझ नहीं आ रही कि हम क्या इच्छा करें। हज़रत उमर रज़ि ने फ़रमाया मेरी यह इच्छा है कि यह घर हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ि और हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि और सालिम मौला अबू हज़ैफ़ह रज़ि और हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ि जैसे लोगों से भरा हुआ हो।

(अल-मुस्तदरिक अलस्सहीहैन भाग 3 पृष्ठ 252 हदीस 5005 किताब मअरफतिस्सहाबा दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत 2002 ई)

पिछली बार भी यह घटना वर्णन की था। इस बार हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि

के वर्णन में भी यह रिवायत आ गई।

हज़रत मुआज़ रज़ि 9 हिज्री से 11 हिज्री तक दो साल यमन में रहे।

(उद्धरित सैरुस्सहाब: भाग 3पृष्ठ 505 मुआज़ बिन जबल रज़ि प्रकाशक दारुल इशाअत कराची)

एक बार हज़रत अमर बिन ख़त्ताब रज़ि ने चार सौ दीनार एक थैली में डाले और ग़ुलाम से कहा हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ि के पास ले जाओ। (यह पिछले ख़ुत्बा में हज़रत अब्बू उबैदा बिन जर्राह रज़ि के वर्णन में भी बयान हुआ था परन्तु इसका बाक़ी कुछ हिस्सा रह गया था तो इसलिए पूरे विस्तार के साथ अब वर्णन कर देता हूँ।)। और घर में उनके पास थोड़ी देर ठहरो। देखो कि वह इस माल के साथ क्या करेंगे। अत: ग़ुलाम थैली लेकर उनके पास गया और कहा अमीरुल मोमनीन ने आप के लिए कहा है कि इस माल को अपनी ज़रूरतों के लिए इस्तिमाल करें। उन्होंने कहा कि अल्लाह उन पर रहम करे। फिर उन्होंने अपनी लौंडी को बुलाया और कहा ये सात दीनार अमुक़ के पास ले जाओ और ये पाँच अमुक़ के पास ले जाओ और ये पाँच अमुक़ के पास ले जाओ यहां तक कि वह सब ख़त्म कर दिए। अपनी नौकरानी को बुला के विभिन्न घरों में भिजवाने के लिए दीनार दिए कि जाकर अमुक़ अमुक़ घरों में ये दे आओ। ग़रीब घर होंगे। फिर वह ग़ुलाम जो था हज़रत उमर रज़ि के पास वापस आया और सारी बात बताई। हज़रत उमर रज़ि ने उतने ही दीनार हज़रत मआज़ रज़ि के लिए भी तैयार रखे हुए थे। जितने अबू उबैदह रज़ि को भेजे थे इतने ही हज़रत मआज़ रज़ि के लिए तैयार रखे थे। दूसरी थैली तैयार की हुई थी। उन्होंने ग़ुलाम से कहा कि इसको हज़रत मआज़ रज़ि के पास ले जाओ और उनके पास घर में थोड़ी देर रुकना और देखना कि वह उनके साथ क्या करते हैं। अत: वह ग़ुलाम थैली लेकर हज़रत मआज़ रज़ि के पास गया। उनसे कहा कि अमीरुल मोमनीन ने कहा है कि इस को अपनी ज़रूरतों के लिए प्रयोग करें। हज़रत मआज़ रज़ि ने कहा अल्लाह तआला उन पर रहम करे। फिर उन्होंने लौंडी को बुलाया और कहा इतने दीनार अमुक़ घर ले जाओ और इतने अमुक़ घर में ले जाओ। इतने में हज़रत मआज़ रज़ि की पत्नी भी आ गईं और उन्होंने कहा अल्लाह की कसम हम भी दरिद्रों में हैं अर्थात घर में भी कुछ नहीं है। कुछ घर के लिए भी तो रख लो। लाभ कमाने की, तोहफा लेने की वे बातें जो पहले आई थीं वह भी और अधिक clear होती हैं, स्पष्ट हो जाती हैं। हमारे घर में भी कुछ नहीं है। हम भी दरिद्रों में शामिल हैं। हमें भी दें। थैली में सिर्फ उस वक़्त दो दीनार बचे थे। सारे आप बांट चुके थे। हज़रत मआज़ रज़ि ने वे दोनों दीनार जो थे अपनी पत्नी की तरफ़ उछाल दिए और ग़ुलाम हज़रत उमर रज़ि के पास आया और उनको सारी बात से आगाह किया। हज़रत उमर रज़ि इस से बहुत ख़ुश हुए और फ़रमाया यक़ीनन ये दोनों हज़रत अबू उबैदह रज़ि और हज़रत मआज़ रज़ि इसी तरह ख़र्च करने में आपस में भाई भाई हैं।

(मजमउज़वाइद भाग 3 पृष्ठ 234 किताबुज़ज़कात बाब फिल अनफ़ाक दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत 2001 ई)

जिस तरह यह ख़र्च करते हैं उनका यह एक गुण है।

शुरीह बिन उबैद और राशिद बिन सईद इत्यादि से रिवायत है कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि जब सर ग़ुवादी पर पहुंचे, सर ग़ुवादी तबूक की एक बस्ती का नाम है। तो आप को बताया गया कि शाम में सख़्त महामारी फैली हुई है। हज़रत उमर रज़ि ने फ़रमाया कि मुझे ख़बर मिली है कि शाम में बहुत अधिक महामारी फैली हुई है। मेरी राय यह है कि अगर मेरी वफ़ात का वक़्त आ जाए और अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ि ज़िन्दा हों तो मैं उन्हें अपना ख़लीफ़ा चुन दूँगा और अगर अल्लाह तआला ने मुझसे उनके बारे में सवाल किया कि तुमने उसे उम्मते मुहम्मदिया पर ख़लीफ़ा क्यों निर्धारित किया तो मैं यह निवेदन करूँगा कि मैं ने तेरे रसूल को यह फ़रमाते हुए सुना था कि हर नबी का एक अमीन होता है और मेरा अमीन अबू उबैदा बिन जर्राह है। यह पहले भी वर्णन हो चुका है। लोगों को यह बात अच्छी न लगी वे कहने लगे कि क़ुरैश के बड़े लोगों अर्थात बनू फ़हीरह का क्या बनेगा? फिर हज़रत उमर रज़ि ने फ़रमाया कि अगर मेरी वफ़ात का वक़्त आ जाए और अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ि भी फ़ौत हो चुके हों तो मुआज़ बिन जबल रज़ि को अपना ख़लीफ़ा निर्धारित कर दूँगा और अगर मेरे सम्मान वाले रब्ब ने मुझ से पूछा कि तुमने उसे क्यों ख़लीफ़ा निर्धारित किया तो मैं कहूँगा कि मैं ने तेरे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना था कि वह क़ियामत के दिन उल्मा के आगे आगे लाए जाऐंगे।

(मस्नद अहमद बिन हंबल मस्नदुल ख़ुलफ़ा राशेदीन मस्नद उमर बिन अल-ख़त्ताब भाग 1 पृष्ठ 109 हदीस 108 आलेमुल कुतुब बेरूत 1998 ई)

(मुअज्जमुल बुलदान भाग 3 पृष्ठ 239)

इल्म में उनका बहुत मक़ाम होगा। हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि और हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ि ने जंग यरमूक 15 हिज्री के अवसर पर मैमना, वह हिस्सा जो लड़ाई के वक़्त फ़ौज का जो कमांडर होता है उसके दाएं तरफ़ खड़ा होता है इस के एक हिस्से का अफ़्सर निर्धारित किया। ईसाइयों का हमला इस क़दर सख़्त हुआ कि मुस्लमानों का मैमना टूट कर फ़ौज से अलग हो गया लोग बिखर गए। जब हज़रत मआज़ रज़ि ने यह हालत देखी तो बहुत बहादुरी और दृढ़ता का सबूत दिया और घोड़े से नीचे उतर गए और कहा कि मैं अब पैदल लड़ूंगा। अगर कोई बहादुर इस घोड़े का हक़ अदा कर सकता है तो घोड़ा उस के लिए हाज़िर है। उनके बेटे भी मैदाने जंग में मौजूद थे उन्होंने कहा मैं इस का हक़ अदा करूँगा क्योंकि मैं सवार हो कर अच्छा लड़ सकता हूँ। अत: दोनों बाप बेटा रूमी फ़ौज को चीर कर अंदर घुस गए और इस दिलेरी से लड़े कि मुसलमानों के उखड़े हुए पांव फिर सँभल गए

(उद्धरित अज़ सैरुस्सहाब: भाग 3 पृष्ठ 508 मुआज़ बिन जबल रज़ि प्रकाशक दारुल-इशाअत कराची) (फ़िरोज़ुल लुग़ात पृष्ठ 1332 ज़ेर शब्द मैमना)

और जो ख़ौफ़ की हालत थी वह फिर उन्होंने दोबारा उनको शिकस्त दे के मुसलमानों को फ़तह दिलवा दी। अबू इदरीस ख़ौलानी वर्णन करते हैं कि मैं शाम में दमिशक़ की मस्जिद में दाख़िल हुआ तो वहां चमकते दाँतों वाला नौजवान मौजूद था और इस के गिर्द लोग जमा थे। जब लोगों का किसी बात पर मतभेद होता तो वह मामला उस के पास ले जाते और उस की राय को प्राथमिकता देते तो मैंने उनके बारे में पूछा तो बताया गया कि यह हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि हैं। अगले रोज़ में दोपहर के वक़्त गया तो देखा कि वो मेरे से पहले दोपहर के वक़्त वहां मौजूद थे। मैंने देखा कि वह नमाज़ पढ़ रहे हैं। मैंने उनका इंतज़ार किया। जब उन्होंने नमाज़ अदा कर ली तो मैं उनके सामने गया और उन्हें सलाम किया। मैंने उनसे कहा कि अल्लाह की क़सम मुझे अल्लाह के लिए आपसे मुहब्बत है। हज़रत मआज़ रज़ि ने कहा अल्लाह की क़सम मैं ने कहा अल्लाह की क़सम! हज़रत मआज़ रज़ि ने फिर कहा, फिर सवाल किया अल्लाह की क़सम मैं ने कहा अल्लाह की क़सम। फिर उन्होंने मेरी चादर का किनारा पकड़ कर मुझे अपनी तरफ़ खींचा और कहा कि ख़ुश हो जाओ क्योंकि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि प्रताप वाला ने यह फ़रमाया है कि मेरे लिए एक दूसरे से मुहब्बत करने वालो, मेरे लिए एक दूसरे के साथ बैठने वालों, मेरे लिए एक दूसरे से मिलने वालो और मेरे लिए एक दूसरे पर ख़र्च करने वालों के लिए मेरी मुहब्बत अनिवार्य हो गई। अर्थात अल्लाह तआला की मुहब्बत अनिवार्य हो गई।

(मस्नद अहमद बिन हंबल मस्नद मुआज़ बिन जबल भाग 7 पृष्ठ 353-354 हदीस 22380 आलेमुल कुतुब बेरूत 1998 ई)

एक रिवायत में है कि हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि की दो बीवियां थीं जब बारी के अनुसार एक के पास होते तो दूसरी के पास पानी तक भी नहीं पीते थे। इतना न्याय था।

एक और रिवायत है कि हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि की दो बीवियां थीं। जिस

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

दिन एक की बारी होती दूसरी के घर में वुज़ू तक नहीं करते थे। फिर दोनों सीरिया में महामारी की बीमारी में फ़ौत हो गईं। इन दोनों को एक ही क़ब्र में दफ़न किया गया। दफ़न करते वक़्त हज़रत मआज़ रज़ि ने क़ुरआ डाला कि पहले किस को क़ब्र में दाख़िल करें। यह उनका न्याय था।

(हुलयतुल औलिया भाग 1 हिस्सा 1 पृष्ठ 204 अनुवाद मुहम्मद असग़र मुग़ल। दारुल-इशाअत कराची 2006 ई)

एक और रिवायत है सैरुस्सहाब: की कि हज़रत मआज़ रज़ि की दो बीवियां थीं। और वे दोनों ताऊन अमवास से वफ़ात पा गई थीं। जबकि एक बेटे का पता चलता है जिस का नाम अब्दुर्रहमान बयान हुआ है और वह जंग यरमूक में हज़रत मआज़ रज़ि के साथ शामिल थे उनकी वफ़ात भी ताऊन अमवास से हुई। (अर्थात ताऊन की वह महामारी जो उस ज़माना में फैली थी)

(उद्धरित सैरुस्सहाब: भाग 3 पृष्ठ 510-511 हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि प्रकाशक दारुल-इशाअत कराची)

जब हज़रत अबू उबैदह रज़ि की ताऊन अमवास से वफ़ात हुई तो हज़रत उमर रज़ि ने हज़रत मआज़ रज़ि को शाम पर आमिल निर्धारित फ़रमाया। अम्वास यह एक बस्ती का नाम है। मैं इस का विवरण पहले भी बयान कर चुका हूँ कि यह रमला से सात मील की दूरी पर है और बैयतुल-मुक़द्दस के रास्ते पर स्थित है। हज़रत मआज़ रज़ि की भी इसी साल इसी ताऊन से वफ़ात हुई।

(अल्इस्तेयाब भाग 3 पृष्ठ 1405 मआज़ बिन जबल प्रकाशक दारुल जैल बेरूत) (मअजमुल बुलदान 4 पृष्ठ 177-178)

कसीर बिन मुर्रह रिवायत करते हैं कि हज़रत मआज़ रज़ि ने अपनी बीमारी में हमें फ़रमाया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से एक बात सुनी थी जिसे मैंने तुम से छुपा कर रखा था। मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सुना। आपने फ़रमाया जिस का आख़िरी कलाम لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه हो उस के लिए जन्नत वाजिब हो गई ।

(मस्नद इमाम अहमद बिन हंबल भाग 7 पृष्ठ 355 मस्नद मुआज़ बिन जबल हदीस 22383 आलेमुल कुतुब बेरूत 1998 ई)

एक दूसरी रिवायत में है कि हज़रत मआज़ रज़ि ने फ़रमाया कि तुम्हें यह हदीस बताने में सिर्फ यह बात रोक थी कि कहीं तुम इस पर ही भरोसा न कर लो और बाक़ी कर्म छोड़ दो।

(मस्नद इमाम अहमद बिन हंबल भाग 7 पृष्ठ 361 मस्नद मुआज़ बिन जबल हदीस 22410 आलेमुल कुतुब बेरूत 1998 ई)

जब सीरिया में ताऊन फैली और हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि को भी ताऊन हो गई तो इस के कारण से उन पर बेहोशी छा गई। जब ज़रा सँभले तो कहा हे अल्लाह !तू अपना गम मुझ पर फैला दे। तेरी इज़्ज़त की क़सम !तू जानता है कि मैं तुझ से मुहब्बत करता हूँ। फिर उन पर बेहोशी छा गई। फिर जब ज़रा सँभले तो दोबारा ऐसा ही कहा।

जब हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि की वफ़ात का समय क़रीब पहुंचा तो फ़रमाया देखो सुबह हो गई है? कहा गया कि अभी सुबह नहीं हुई। यहां तक कि जब सुबह हुई तो कहा गया कि सुबह हो गई है। हज़रत मआज़ रज़ि ने कहा कि में इस रात से ख़ुदा की पनाह मांगता हूँ जिस की सुबह जहन्नुम की तरफ़ ले जाए। मैं मौत का स्वागत करता हूँ। मैं अपने महबूब से मिलने वाले को स्वागत कहता हूँ जो एक ज़माना के बाद आ रहा है। हे अल्लाह ! तू जानता है कि मैं तुझसे डरता हूँ परन्तु आज के दिन मैं आशावादी हूँ। मैं दुनिया और लम्बी ज़िन्दगी से इसलिए मुहब्बत नहीं करता कि इस में नहरें खोदूँ या इस में वृक्ष लगाऊँ बल्कि इसलिए कि दोपहर की प्यास और हालात की तकलीफ़ें सहन करूँ और उन उल्मा के साथ बैठूँ जहां तेरा वर्णन किया जाए। फिर एक और रिवायत में है कि जब हज़रत मआज़ रज़ि की वफ़ात का समय निकट आया तो वह रोने लगे। उनसे कहा गया कि आप क्यों रोते हैं? आप तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथी हैं। तो उन्होंने कहा कि मैं मरने के ग़म के कारण से नहीं रो रहा और न इसलिए कि दुनिया पीछे छोड़े जा रहा हूँ बल्कि मैं तो सिर्फ इसलिए रो रहा हूँ कि दो गिरोह होंगे और मैं नहीं जानता कि मैं किस गिरोह में उठाया जाऊँगा। (उद्धरित उसदुल ग़ाबह फ़ी मारफ़तिस्सहाब भाग 5 पृष्ठ 189 '' मुआज़ बिन जबल दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत) एक जन्नती है और एक दोज़ख़ी और मुझे तो केवल अल्लाह का ख़ौफ़ है इसलिए रो रहा हूँ।

मस्नद अहमद बिन हंबल में रिवायत है कि हज़रत मआज़ रज़ि ने कहा कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि शीघ्र ही तुम शाम की तरफ़ हिजरत करोगे और वह तुम्हारे हाथों फ़तह हो जाएगा परन्तु वहां तुम लोगों में एक बीमारी ज़ाहिर होगी जो फोड़े फुंसियों या सख़्त काटने वाली चीज़ की तरह होगी। वह इन्सान की नाभि के निचले हिस्से में ज़ाहिर होगी। अल्लाह उस के द्वारा उन्हें शहादत अता फ़रमाएगा और उनके कर्मों को पवित्रता फ़रमाएगा। हे अल्लाह अगर तू जानता है कि मुआज़ बिन जबल ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से यह हदीस सुनी है तो उसे और उस के घर वालों को इस का वाफ़र हिस्सा प्रदान फ़र्मा। यह आप ही फ़र्मा रहे हैं। अत: वे सब इस ताऊन में पीड़ित हो गए और उनमें से एक भी ज़िन्दा बाक़ी नहीं रहा। जब हज़रत मआज़ रज़ि की शहादत वाली उंगली में ताऊन की गिलटी प्रकट हुई तो आप फ़रमाते थे कि मुझे उस के बदले में लाल ऊंट मिलना भी पसन्द नहीं हैं। मैं इसी बात पर ख़ुश हूँ।

(मस्नद इमाम अहमद बिन हंबल भाग 7 पृष्ठ 371 मस्नद मुआज़ बिन जबल हदीस 22439 आलेमुल कुतुब बेरूत 1998 ई)

तारीख़ तिबरी में है कि आप की हथेली में फोड़ा निकला। आप अपनी हथेली को देखते और इस हाथ की पीठ को चूमते और कहते मुझे यह पसन्द नहीं कि तेरे बदले में दुनिया की कोई चीज़ मिले।

(तारीख़ अत्तिबरी भाग 4 पृष्ठ 238 ख़ुरूज उमर बिन अल-ख़त्ताब इला शाम। दारुल फ़िक्र बेरूत)

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि ने 18 हिज्री में वफ़ात पाई। आप की उम्र के बारे में विभिन्न राए हैं उनके अनुसार 33,34 और 38 साल उम्र वर्णन की है।

(उसदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 5 पृष्ठ 190'' मुआज़ बिन जबल' दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत लबनान 2003 ई)

हज़रत मआज़ रज़ि की रिवायतों की संख्या जो हदीसों में है 157 है जिसमें से दो हदीसों पर बुख़ारी और मुस्लिम की सहमति है। दोनों में ये वर्णित हैं।

(सैरुस्सहाब: भाग 3 , हिस्सा 5 पृष्ठ 156 संस्था इस्लामियात लाहौर)

अगले सहाबी जिन का वर्णन है वह अब्दुल्लाह बिन अमरो हैं। हज़रत अब्दुल्लाह का सम्बन्ध अन्सार के क़बीला ख़ज़रज की शाख़ बनू सलमा से था। आपके पिता का नाम अमरो बिन हराम और माता का नाम रुबब पुत्री क़ैस था।

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 423 अब्दुल्लाह बिन अमरो, दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत, 2012 ई

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमरो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जन्म से लगभग चालीस साल पहले पैदा हुए।

(सहाबा डाक्टर ज़ुल्फ़िक़ार काज़िम पृष्ठ 486 अब्दुल्लाह बिन अमरो रज़ि, बैयतुल उलूम पुरानी अनारकली लाहौर)

अर्थात हिजरत के वक़्त उनकी उम्र चालीस साल थी। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमरो एक मशहूर सहाबी हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि के पिता थे।

(अल-असाब फ़ी तमीज़िस्सहाबा भाग 4 पृष्ठ 162 अब्दुल्लाह बिन अमरो, दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत 2005 ई)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमरो रज़ि हज़रत उम्रो बिन जमूह रज़ि के साले थे।

(ख़ुत्बाते ताहिर तक़ारीर जलसा सालाना ख़िलाफ़त से पहले तक़रीर जलसा सालाना 1979 ई,पृष्ठ 349)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमरो रज़ि बैअत उक़बा सानिया में शामिल थे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निर्धारित किए गए 12 नक़ीबों में से एक थे। आप जंग बदर में शामिल हुए और जंग उहद में शहीद हुए। कुछ के निकट हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमरो रज़ि जंग उहुद में मुसलमानों की तरफ़ से सबसे पहले शहीद थे।

(अल्इस्तेयाब फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 3 पृष्ठ 84 अब्दुल्लाह बिन अमरो, दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत, 2002 ई)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण के उदाहरण प्रस्तुत करो यहां तक कि सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

उनके ईमान लाने की घटना इस तरह वर्णन हुई है कि हज़रत कअब बिन मालिक रज़ि वर्णन करते हैं कि हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अय्यामे इतशरीक अर्थात हज के दिनों में आख़िरी तीन दिन जो ग्यारह से तेरह ज़िलहज्जा तक है इस के बीच के दिन उक़बा में मिलने का वादा किया। उक़बा मक्का और मिना के मध्य स्थित है पहले भी वर्णन कर चुका हूँ। जब हम हज से फ़ारिग़ हुए और वह रात आ गई जिस का हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से वादा किया था तो हमारे साथ अब्दुल्लाह बिन अमरो भी थे जो हमारे सरदारों में से एक सरदार थे और हमारे शरीफ़ों में से थे। हमने उन्हें अपने साथ लिया। हमने अपने लोगों में से मुशरिकीन से अपना मामला छुपाया हुआ था। हमने उनसे कहा अबू जाबिर रज़ि! आप हमारे सरदारों में से एक हैं और हमारे शुरफ़ा में से हैं। उनकी कुनिय्यत अब्बू जाबिर थी इसलिए उनको अब्बू जाबिर भी कहते थे। तो कहते हैं हमने उनसे कहा कि हे अबू जाबिर आप हमारे सरदारों में से एक हैं और हमारे शरीफ़ों में से हैं और हम नहीं चाहते कि आप जहन्नुम का ईंधन बनें। अत: हमने उन्हें इस्लाम की दावत दी और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास उक़बा स्थान में जाने की ख़बर दी। वह कहते हैं उन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया और बैअत उक़बा में शामिल हुए और नक़ीब निर्धारित हुए।

(सीरत इब्ने हिशाम भाग 1 पृष्ठ 236 अमरो अल-अकबतुस्सानी, दार इब्ने हज़म बेरूत 2009 ई) (उर्दू दायरा मआरिफ़ इस्लामिया भाग 6 पृष्ठ 413 प्रकाशक उर्दू विभाग दायरा मआरिफ़ लाहौर)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि बयान करते हैं कि मैं और मेरे पिता और मेरे दो मामूं अक़बा वालों में से हैं। इब्ने उययैना एक रावी हैं। वह कहते हैं कि उनमें से एक हज़रत बरा बिन मअरूर हैं।

(सही बुख़ारी किताब मनाक़िब अल-अनसार बाब वफ़ूद अल-अनसार इलन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हदीस नंबर 3890-3891)

अक़बा सानिया के बारे में "सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन में एक सहाबी के वर्णन में बल्कि दो के वर्णन में पहले एक विस्तार वर्णन कर चुका हूँ। यहां थोड़ा सा हिस्सा दोबारा वर्णन करता हूँ। बैअत उक़बा सानिया के बारे में 'सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन में जो लिखा गया है इस में जो हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमरो रज़ि के बारे में हिस्सा है, वर्णन करता हूँ।

तेरह नब्वी का जो महीना है अलहज्जा, इस में हज के अवसर पर ओस और ख़ज़रज के कई सौ आदमी मक्का में आए। उनमें सत्तर व्यक्ति ऐसे शामिल थे जो या तो मुस्लमान हो चुके थे और या अब मुस्लमान होना चाहते थे और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मिलने के लिए मक्का आए थे।

इस अवसर पर एक सामूहिक और एकान्त की मुलाक़ात की ज़रूरत थी इसलिए हज के कामों के बाद माह ज़िल-हज्जा की मध्य तारीख़ निर्धारित की गई। कि इस दिन आधी रात के क़रीब ये सब लोग पिछले साल वाली घाटी में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को आकर मिलें। यह निर्धारित किया गया ताकि सन्तोष और एकान्त में बातचीत हो सके। और आप ने अन्सार को ताकीद फ़रमाई कि इकट्ठे न आएं बल्कि एक-एक दो-दो कर के निर्धारित समय पर घाटी में पहुंच जाएं और सोते को न जगाएँ और न ग़ैर हाज़िर का इंतज़ार करें। अत: जब निर्धारित तारीख़ आई तो रात के वक़्त जबकि एक तिहाई रात जा चुकी थी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अकेले घर से निकले और रास्ते में अपने चाचा अब्बास को साथ लिया जो अभी तक मुशरिक थे परन्तु आप से मुहब्बत रखते थे और ख़ानदान हाशिम के रईस थे और फिर दोनों मिलकर इस घाटी में पहुंचे। अभी अधिक देर न हुई थी कि अन्सार भी एक एक दो दो कर के आ पहुंचे। ये सत्तर व्यक्ति थे और ओस और ख़ज़रज दोनों क़बीलों से सम्बन्ध रखने वाले थे।

सबसे पहले अब्बास ने बातचीत शुरू की और कहा कि हे ख़ज़रज के गिरोह मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने ख़ानदान में सम्मान्नीय तथा प्रिय है और वह ख़ानदान आज तक उस की सुरक्षा का ज़ामिन रहा है और हर ख़तरा के वक़्त में इस के लिए सीना ताने खड़ा हुआ है। परन्तु अब मुहम्मद का इरादा अपना वतन छोड़कर तुम्हारे पास चले आने का है। अत: अगर तुम उसे अपने पास ले जाने की इच्छा रखते हो तो तुम्हें उस की हर तरह सुरक्षा करनी होगी और हर दुश्मन के सामने सीना ताने खड़ा होना पड़ेगा। अगर तुम इस के लिए तैयार हो तो बेहतर वर्ना अभी से साफ़ साफ़ जवाब दे दो क्योंकि साफ़-साफ़ बात अच्छी होती है। बरा बिन मअरूर जो अन्सार के क़बीला के एक उमर वाले और प्रभावी बुज़ुर्ग थे उन्होंने कहा अब्बास! हमने तुम्हारी बात सुन ली है परन्तु हम चाहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुद अपनी मुबराक ज़बान से कुछ फ़र्मा दें और जो ज़िम्मेदारी हम पर डालना चाहते हैं वह वर्णन फ़र्मा दें। इस पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़ुरआन शरीफ़ की कुछ आयतों की तिलावत फ़रमाईं और फिर एक संक्षिप्त सी तक़रीर फ़रमाई जिसमें इस्लाम की शिक्षा वर्णन फ़रमाई और हुक़ूक़ अल्लाह और हुक़ूक़ुल अल्लाह की व्याख्या करते हुए फ़रमाया कि मैं अपने लिए सिर्फ इतना चाहता हूँ कि जिस तरह तुम अपने प्रियों और रिश्तेदारों की सुरक्षा करते हो इसी तरह अगर ज़रूरत पड़े तो मेरे साथ मामला करो। जब आप तक़रीर ख़त्म कर चुके तो बराअ बिन मअरूर ने अरब के नियम के अनुसार आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हाथ अपने हाथ में लेकर कहा हे रसूलुल्लाह!हमें उस ख़ुदा की क़सम है जिसने आप को हक़ तथा सच्चाई के साथ मबऊस फ़रमाया है कि हम अपनी जानों की तरह आप की हिफ़ाज़त करेंगे। उनमें से एक व्यक्ति के कहने पर कि यह तो हम वादा करते हैं कि करेंगे परन्तु ये बताएं ,आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा कि जब आप को ग़लबा मिलेगा तो हमें छोड़ तो नहीं जाऐंगे? तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस पर हंसकर फ़रमाया कि तुम्हारा ख़ून मेरा ख़ून होगा। तुम्हारे दोस्त मेरे दोस्त होंगे। तुम्हारे दुश्मन मेरे दुश्मन होंगे। इस पर अब्बास बिन अबादह अन्सारी ने अपने साथियों पर नज़र डाल कर कहा कि लोगो !क्या तुम समझते हो कि इस वादा और सन्धि के क्या अर्थ हैं? इस का यह अर्थ है कि अब तुम्हें हर काले और लाल, हर काले गोरे, लाल तथा सफ़ेद के साथ मुक़ाबला के लिए तैयार हो जाना चाहिए और हर क़ुर्बानी के लिए तैय्यार रहना चाहिए। लोगों ने कहा हाँ हम जानते हैं। परन्तु हे रसूलुल्लाह ! इस के बदला में हमें क्या मिलेगा? आप ने फ़रमाया तुम्हें ख़ुदा की जन्नत मिलेगी जो उस के सारे इनामों में से बड़ा इनाम है। सब ने कहा हमें यह सौदा स्वीकार है। हे रसूलुल्लाह अपना हाथ आगे करें। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपना मुबारक कदम आगे बढ़ा दिया और यह सत्तर जान कुर्बान करने वालों की जमाअत एक प्रतिरक्षा की मुआहिदा में आप के हाथ पर बिक गई। इस बैअत का नाम बैअत अक़बा सानिया है।

जब बैअत हो चुकी तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे फ़रमाया कि मूसा ने अपनी क़ौम में से बारह नक़ीब चुने थे जो मूसा की तरफ़ से उनके निगरान और मुहाफ़िज़ थे। मैं भी तुम में से 12 नक़ीब निर्धारित करना चाहता हूँ जो तुम्हारे निगरान और मुहाफ़िज़ होंगे और वह मेरे लिए ईसा के हवारियों की तरह होंगे और मेरे सामने अपनी क़ौम के बारे में जवाब देने वाले होंगे। अत: तुम उचित लोगों के नाम परामर्श कर के मेरे सामने पेश करो। अत: बारह आदमी चुने गए जिन्हें आपने मंज़ूर फ़रमाया और उन्हें एक एक क़बीला का निगरान निर्धारित करके उनके फ़राइज़ समझा दिए और कुछ क़बीलों के लिए आपने दो-दो नक़ीब निर्धारित फ़रमाए। बहरहाल इन 12 नक़ीबों में अब्दुल्लाह बिन अमरो का नाम भी शामिल था और उनको भी आपने नक़ीब निर्धारित फ़रमाया।

(उद्धरित सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन पृष्ठ 227 से 231)

एक रिवायत में आता है कि जंगे उहुद के अवसर पर जब अब्दुल्लाह बिन उबय्य बिन सलूल ने जो मुनाफ़क़ीन मदीना का सरदार था ग़द्दारी की तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमरो ने उन लोगों को नसीहत करने की कोशिश की।

(जंग उहद अल्लामा मुहम्मद अहमद बाशमील पृष्ठ 215 नफ़ीस अकेडमी उर्दू बाज़ार कराची,1989 ई)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह वर्णन करते हैं कि मेरे पिता हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमरो और मामूं जंग उहद में शहीद हो गए तो मेरी माता जबकि दूसरी रिवायत में है कि फूफी जो हज़रत अमरो बिन जमूह रज़ि की पत्नी थीं उन दोनों को ऊंटनी पर रखकर मदीना ला रही थीं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ऐलान करने वाले ने ऐलान किया कि अपने मक़्तूलों को उनके लड़ने की जगह पर दफ़नाओ। इस पर इन दोनों को वापस ले जाया गया और उनके लड़ने की जगह पर ही दफ़ना दिया गया।

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 423 अब्दुल्लाह बिन अमरो, दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत, 2012 ई)

(अल-असाबा फ़ी तमीज़िस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 287 अब्दुल्लाह बिन अमरू दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत 1995 ई)

एक और रिवायत में है कि हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि वर्णन करते हैं कि जंग उहद के अवसर पर मदीना वालों में ख़बर फैल गई कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शहीद हो गए हैं। यह ख़बर सुनकर मदीना में रोना पीटना होने लगा

इस पर अन्सार की एक औरत भी उहद की तरफ़ निकली तो रास्ते में उसने अपने पिता, बेटे, पति और भाई की लाशों को देखा। रावी कहते हैं कि यह मालूम नहीं सबसे पहले उसने किसे देखा। जब वह उनमें से किसी के पास से गुज़रती तो वह कहती यह कौन है? लोग कहते तुम्हारा पिता है, तुम्हारा भाई है, तुम्हारा पति है, तुम्हारा बेटा है। वह कहती रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का क्या हाल है? लोगों ने बताया कि आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तुम्हारे सामने हैं यहां तक कि वह आप की सेवा में हाज़िर हुई और आपके कपड़े का दामन पकड़ कर निवेदन करने लगी हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान हों जब आप सही सलामत हैं तो मुझे किसी की मौत की कोई पर्वा नहीं।

(मजमउल ज़वायद भाग 6 पृष्ठ 120 किताबुल मुग़ाज़ी वस्सैर बाब फ मन इस्तसग़र यौम अहद, दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत 2001 ई)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-राबे ख़िलाफ़त से दो तीन साल पहले की बात है जलसा सालाना में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत और जंगों पर तक़रीर किया करते थे वहां हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमरो रज़ि के बारे में जो एक वर्णन किया वह भी मैं यहां पढ़ देता हूँ। फ़रमाया कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमरो की बहन अर्थात हज़रत अमरो बिन जमूह रज़ि की पत्नी भी अपने भाई ही की तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत में सिर से पैर तक रंगीन थीं। पति इस जंग में शहीद हुआ। भाई इस जंग में शहीद हुआ। बेटा इस जंग में शहीद हुआ परन्तु आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सलामती की ख़ुशी इन सब ग़मों पर ग़ालिब आ गई। हज़रत आयशा सिद्दीक़ा वर्णन करती हैं कि मैं मैदाने जंग की तरफ़ हालात मालूम करने जा रही थी कि रास्ते में मुझे अमरो बिन जमूह की बीवी हिंद एक ऊंट की मुहार पकड़े मदीना की तरफ़ जाती हुई मिली। मैं ने उस से पूछा मैदाने जंग की क्या ख़बर है? उसने जवाब दिया अलहमदो लिल्लाह सब ख़ैरीयत है। हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ैरीयत से हैं। इतने में मेरी नज़र ऊंट पर पड़ी जिस पर कुछ लदा हुआ था। मैंने पूछा यह ऊंट पर क्या लदा हुआ है? कहने लगी मेरे पति अमरो बिन जमूह की नाश है, मेरे भाई अब्दुल्लाह बिन अमरो की लाश है, मेरे बेटे ख़ल्लाद की लाश है। यह कह कर वह मदीना की तरफ़ जाने लगी परन्तु ऊंट बैठ गया और किसी तरह उठने में न आता था। आख़िर जब वो उठा तो मदीना की तरफ़ जाने से इन्कार कर दिया तब उसने अर्थात इस ख़ातून ने इस की महार फिर उहुद के मैदान की तरफ़ मोड़ दी तो वह ख़ुशी ख़ुशी चलने लगा। फिर लिखते हैं कि इधर तो औरत का यह माजरा गुज़र रहा था कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इशक़ तथा मुहब्बत की यह दास्तान थी और इधर आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सहाबा से यह फ़र्मा रहे थे कि जाओ अमरो बिन जमूह और अब्दुल्लाह बिन अमरो की लाशें तलाश करो कि उन्हें इकट्ठा दफ़न किया जाएगा क्योंकि वह इस दुनिया में भी एक दूसरे से बहुत प्यार करते थे।

(उद्धरित ख़ुताबात ताहिर, तक़ारीर जलसा सालाना ख़िलाफ़त से पहले तक़रीर जलसा सालाना 1979 ई, पृष्ठ 350-351)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भी इन दोनों का बड़ा ख़्याल था। एक रिवायत में वर्णन है कि जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमरो रज़ि ने जंग उहुद के लिए निकलने का इरादा किया तो अपने बेटे हज़रत जाबिर को बुलाया और उनसे कहा हे मेरे बेटे मैं देखता हूँ कि मैं अव्वलीन शहीदों में से हूंगा और अल्लाह की क़सम मैं अपने पीछे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ात के बाद तुम्हारे इलावा किसी को नहीं छोड़ के जा रहा जो मुझे अधिक अज़ीज़ हो। मेरे ज़िम्मा कुछ क़र्ज़ है मेरा वह क़र्ज़ मेरी तरफ़ से अदा कर देना और मैं तुम्हें तुम्हारी बहनों के साथ अच्छे व्यवहार की वसीयत करता हूँ। हज़रत जाबिर वर्णन करते हैं कि अगली सुबह मेरे पिता साहिब सबसे पहले शहीद हुए और दुश्मनों ने उनकी नाक और कान काट डाले थे।

(उसदुल ग़ाब फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 3 पृष्ठ 344 अब्दुल्लाह बिन अमरो, दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह फ़रमाते हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उहुद के शहीदों को दफ़न करने के लिए तशरीफ़ लाए तो आप ने फ़रमाया कि उनको उनके ज़ख़्मों सहित ही कफ़न दे दो क्योंकि मैं उन पर गवाह हूँ और कोई मुस्लमान ऐसा नहीं जो अल्लाह की राह में ज़ख़्मी किया जाए परन्तु वह क़यामत के दिन इस तरह आएगा कि उस का ख़ून बह रहा होगा और उस का रंग ज़ाफ़रान का होगा और उस की ख़ुशबू कस्तूरी की होगी। अर्थात कि यह प्रिय लोग हैं जो अल्लाह तआला के समक्ष हाज़िर होंगे। उन्हें नहलाने और कफ़नाने की कोई ज़रूरत नहीं है। इन्हीं का लिबास उनका कफन है।

हज़रत जाबिर कहते हैं कि मेरे पिता को एक चादर का कफ़न दिया गया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़र्मा रहे थे कि उनमें से कौन अधिक क़ुरआन जानने वाला है? जब ये शहीद दफ़न किए जा रहे थे तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते थे कि कौन अधिक क़ुरआन जानने वाला है? जब किसी एक की तरफ़ इशारा किया जाता तो आप फ़रमाते कि इस को क़ब्र में इस के साथियों से पहले उतारो अर्थात जो क़ुरआन जानने वाले लोग थे उनको आप पहले दफ़न करवाते जाते थे और लोग कहते कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमरो रज़ि उहुद के रोज़ सबसे पहले शहीद हुए। उस वक़्त यह भी लोगों में बातें हो रही थीं कि सबसे पहले जो शहीद थे अब्दुल्लाह बिन अमरो रज़ि थे। सुफ़ियान बिन अब्द शम्स ने आप को शहीद किया था। अत: आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पीछे हटने से पहले आपकी नमाज़ जनाज़ा अदा की। दोबारा जो हमला हुआ है इस से पहले ही आप की नमाज़ जनाज़ा अदा कर दी थी और फ़रमाया कि अब्दुल्लाह बिन अमरो रज़ि और अमरो बिन जमूह रिज़ को एक ही क़ब्र में दफ़न करो क्योंकि उनके बीच इख़लास और मुहब्बत थी। इसी तरह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इन दोनों को जो दुनिया में आपस मुहब्बत करने वाले थे एक ही क़ब्र में दफ़न करो। वह कहते हैं कि अब्दुल्लाह बिन अमरो रज़ि लाल-रंग के थे और आप के सिर के अगले हिस्से पर बाल न थे और क़द अधिक लंबा न था जबकि हज़रत अमरो बिन जमूह रज़ि लंबे क़द वाले थे इसलिए दोनों पहचान लिए गए और दोनों को एक ही क़ब्र में दफ़न कर दिया गया।

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 424 अब्दुल्लाह बिन अमरो, दारुल कुतुब अल्इल्मिया बेरूत, 2012 ई)

उनका बाक़ी वर्णन इंशा अल्लाह बाद में करूँगा।

(अलफ़ज़ल इंटरनेशनल 20 नवम्बर 2020 पृष्ठ 5 से 10)

☆ ☆ ☆ ☆

आवश्यक संशोधन

अख़बार 1 अक्तूबर 2020 ई पृष्ठ 1 में एक हदीस प्रकाशित हुई थी।

" हज़रत अबू क़तादा रज़ि से रिवायत है कि :नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़ुहर और अस्र की दो रकअतों में सूरह फातिहा और कोई सूरत पढ़ा करते थे और कभी हमें भी कोई आयत सुना देते।"

इस पर प्राइवेट सैक्रेटरी हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रिहिल अज़ीज़ की तरफ़ से चिट्ठी प्राप्त हुई कि

"इस बारे में हसबे इर्शाद अनुसंधान करवाने के बाद यह बात सामने आई है कि हदीस में वर्णित وَيُسْمِعُنَا الْآيَةَ أَحْيَانًا अर्थात कभी-कभी हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमें कोई आयत सुना भी दिया करते थे से अभिप्राय ऊंची आवाज़ में क़िरआत करना नहीं है बल्कि उस का अर्थ यह कि आंहज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सहाबा को धर्म सिखाने के लिए कभी-कभी कुछ शब्द बुलन्द आवाज़ में अदा फ़र्मा देते थे या उनमें तिलावत Whisper की तरह से होती थी जिससे सुनने वालों को पता चल जाता था कि आप ने कौन सी आयतें तिलावत फ़रमाई हैं।"

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया है कि "इस हदीस की वज़ाहत होनी चाहिए। उस के अनुसार ठीक करें और भविष्य में मज़मून को ध्यान से पढ़ कर फिर प्रकाशित किया करें।"

इदारा इस भूल पर क्षमा चाहती है। अल्लाह तआला हमें हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला की इच्छा के अनुसार बेहतर रंग में मक़बूल सेवाओं का सामर्थ्य प्रदान फ़रमाए। आमीन। (संपादक)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

पृष्ठ 2 का शेष

होंगी। तब ही अमन स्थापित किया जा सकेगा। और इस ज़माना की मुश्किलों का ख़ात्मा हो सकेगा।

एक मेहमान Steffan Weber साहिब जो स्थानीय असेंबली के मेंबर हैं अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहते हैं: यह आयोजन बहुत ही कामयाब है। आप लोग सबसे इतने प्यार और मुहब्बत से पेश आ रहे हैं। ख़लीफ़ा साहिब का ख़िताब भी निहायत ही उत्तम था। उन्होंने पहले तो समस्त जो सम्बोधन थे उसका सार वर्णन किया और फिर अपने विचारों के साथ जोड़ा। इस तरह से एक दिलचस्पी स्थापित की गई और मैं तो बहुत ग़ौर से उनकी तक़रीर सुन रहा था।

एक मेहमान औरत Elke Christina Roder साहिबा जो साथ वाले शहर Norderstedt की लार्ड मेयर हैं कहती हैं :प्रोग्राम के प्रबन्ध बहुत ही अच्छे हैं। हमेशा कोई न कोई साथ होता जो मेरे सवालों के उत्तर देता। ख़लीफ़ा मेरे निकट एक बहुत ही impressive व्यक्तित्व हैं। मुझे खाने के दौरान उनसे बातचीत करने का अवसर मिला। बहुत ही अच्छे इन्सान हैं खासतौर पर जो बातें उन्होंने आज हमें उधर बताई हैं उनसे बहुत से लोगों का इस्लाम के बारह में दृष्टिकोण बदल गया होगा। खासतौर पर उनका इस बात पर ज़ोर देना कि अमन स्थापित करने के लिए हम सबको मिल-जुल कर चलना होगा। इस बात पर में उनका शुक्रिया अदा करना चाहती हूँ और मेरी इच्छा है कि जमाअत के मेंबर ख़लीफ़ा का यह वाला सन्देश अब Norderstedt के दूसरे निवासियों तक भी पहुंचाएं। आज का दिन मेरे लिए तो बहुत ही लाभदायक रहा और मैं इसकी शुक्रगुज़ार हूँ।

Angelika Rubmann साहिबा और उनके पति Karlhermann साहिब अपने विचारों को वर्णन करते हुए कहते हैं :आज ख़लीफ़ा की मौजूदगी बहुत ही कशिश वाली महसूस हो रही थी। एक शान्ति उनकी व्यक्तित्व से प्रकट होता है और दूसरों पर वह शान्ति असर करती है। इस तरह इन्सान को सन्तोष प्राप्त होता है। ख़लीफ़ा को यदि देखते हैं तो महसूस होता है कि वह एक आकर्षक व्यक्तित्व हैं।

Angelika Rubmann साहिबा और अधिक कहती हैं कि इस ख़िताब से यह मुझे शिक्षा प्राप्त हुई कि हमें इस बारे में ग़ौर करना चाहीए कि हमारा रोज़मर्रा का दूसरों से व्यवहार कैसा है। हमें दोस्तों और ग़ैरों की मदद करनी चाहिए।

आख़िर पर महोदया अपनी एक घटना का ज़िक्र करते हुए कहती हैं कि पाँच साल पहले मेरे पति को पहली बार कैंसर हुआ था। तंदरुस्त हो जाने के बाद पिछले साल दोबारा कैंसर हो गया। एक अहमदी दोस्त ने हमें कहा कि वह अपने ख़लीफ़ा को इस बात के बारे में लिखते हैं। और जब उसके बाद मेरे पति का चेकअप हुआ तो कैंसर का नाम तथा निशान भी बाक़ी न था। अहमदी के कहने पर मैंने भी ख़लीफ़ा को एक ख़त लिखा और दो हफ़्ते बाद उसका जवाब भी आ गया। जब भी में इस बारे में बात करती हूँ तो मेरे रौंगटे खड़े हो जाते हैं। जब हमें जवाब आया था तो हम दोनों बहुत रोए। वैसे तो हम इतने धार्मिक लोग नहीं परन्तु यह एक ऐसी घटना था जिसने अपना प्रभाव हम पर छोड़ा। मैं यह ख़त हमेशा अपने साथ रखती हूँ क्योंकि मेरे लिए यह ख़त हमारे फ़रिश्ता (guardian angel)की हैसियत रखता है। इसके बाद हम दोनों में तब्दीली पैदा हो गई। जब आज ख़लीफ़ा को भी देखा तो हम दोनों के दोबारा से रोंगटे खड़े हो गए।

एक मेहमान Tobias von der Heide साहिब जो प्रान्तीय असेंबली के मेंबर हैं अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहते हैं :आज के प्रोग्राम में बहुत से लोगों को मिलने का अवसर मिला और जिस तरफ़ भी देखें लोगों के चेहरों से ख़ुशी प्रकट हो रही होती है। ख़लीफ़ा का व्यक्तित्व बहुत ही प्रभावित करने वाला है। उनका ख़िताब उत्तम था। उन्होंने अपने ख़िताब में इस पक्ष पर ज़ोर दिया कि एक ऐसा इस्लाम फैलना चाहीए जो अम्न पसन्द हो। ख़लीफ़ा तो सब लोगों में एकता स्थापित करना और दूरियाँ मिटाना चाहते हैं। कई बातों ने मुझ पर गहरा प्रभाव किया है।

एक मेहमान Melanie Wellendorf साहिबा कहती हैं: इस आयोजन में मुझे बहुत से लोगों से मिलने का अवसर मिला जो सब के सब बहुत ही प्यार करने वाले थे। परन्तु आज सबसे प्रभावित करने वाली और दिलकश मुझे ख़लीफ़ा की हस्ती लगी। उन्होंने पहले सम्बोधनों को बहुत ही उत्तम रंग में अपने ख़िताब में शामिल किए।

Susanne Hahn साहिबा जो एक प्रोटेस्टेंट चर्च की पादरी हैं अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहती हैं: जिस तरह आज का आयोजन आयोजित हुआ और जितने लोग यहां इकट्ठे हुए हैं यह इस शहर में इतने बड़े पैमाने पर पहली बार प्रोग्राम आयोजित हो रहा है। मुझे बहुत ख़ुशी हुई कि अब जमाअत अहमदिया की मस्जिद का बनना पूर्ण हो गया है। ख़लीफ़ा ने अपने ख़िताब में हम सबके सम्बोधनों का वर्णन भी किया और साथ अपना दृष्टिकोण भी प्रस्तुत करते गए। मुझे इस बात की ख़ुशी हुई कि वह भी और हम ईसाई भी यह कहते हैं कि ख़ुदा ही वह हस्ती है जो दुनिया का मालिक है। ख़लीफ़ा का आज इधर आना केवल अहमदियों के लिए ही नहीं बल्कि समस्त पड़ोसियों के लिए भी बहुत ख़ुशी और सम्मान की बात है।

Antje साहिबा कहती हैं आज का यह आयोजन impressive था। इतनी संख्या में लोग इकट्ठे हो रहे हैं और समस्त काम उत्तम तरीक़ से किए जा रहे हैं और एक अमन की फ़िज़ा स्थापित है। मुझे यह बात भी अच्छी लगी कि विभिन्न लोगों को सम्बोधन करने का अवसर दिया गया अर्थात धार्मिक और राजनीतिक लोगों तथा औरतों ने अपने विचारों का इज़हार किया। फिर ख़लीफ़ा का जो ख़िताब था वह भी बहुत अच्छा था। मुझे यह बात भी पसन्द आई कि उन्होंने खासतौर पर एकता स्थापित करने की तरफ़ ध्यान दिया। ख़लीफ़ा को मुझे पहली बार देखने का अवसर मिला।

एक मेहमान कहते हैं : मुझे आज के आयोजन में ख़लीफ़ा का चुनाव बहुत अच्छा लगा क्योंकि उन्होंने हमारी इस्लाम के बारे में बहुत सी शंकाएं दूर की हैं। उन्होंने जिस तरह बराबरी का पहलू वर्णन किया वह समस्त धर्मों के लिए महत्त्वपूर्ण है।

एक मेहमान Astrid Huemke जो कि Quickborn की वाइस मेयर हैं उन्होंने अपनी भावनाओं का इज़हार करते हुए कहा :मैं वापस जा कर ज़रूर समय के ख़लीफ़ा की इन बातों को फैलाऊंगी और जब भी कोई इस्लाम पर आरोप करेगा तो मैं समय के ख़लीफ़ा के आदेशों को प्रस्तुत करते हुए इस्लाम की रक्षा करने की कोशिश करूँगी। समय के ख़लीफ़ा केवल हम मेहमानों से सम्बोधित नहीं हुए बल्कि अपनी जमाअत के लोगों को भी इस तरफ़ ध्यान दिलाया कि आप लोगों ने मस्जिद के बनने के बाद पहले से बढ़कर इन्सानियत की सेवा करनी है।

एक मेहमान जो पेशे की दृष्टि से डेंटिस्ट हैं, उन्होंने कहा :समय के ख़लीफ़ा की तक़रीर के समस्त बिन्दुओं से सहमति रखता हूँ। ईसाइयत में भी बहुत से ऐसे बिन्दु हैं जिनका वर्णन समय के ख़लीफ़ा ने अपने ख़िताब में किया है। एक और बात जिसने मुझे प्रभावित किया वह यह है कि हमारे देश में जो बदअमनी है इसका हल समय के ख़लीफ़ा के ख़िताब में मौजूद था।

वेटक साहिब (Witecke) जो पेशे की दृष्टि से एक वकील हैं , कहते हैं: इमाम जमाअत अहमदिया की मौजूदगी का माहौल पर एक हैरत में डालने वाला प्रभाव था और उनके रुहानी प्रभाव के कारण से उनकी तक़रीर का सीधा दिल पर प्रभाव होता था। उन्होंने अपने ख़िताब में औरत के स्थान को बहुत अच्छे रंग में वर्णन किया है और इस से इस्लाम में औरत का स्थान और समाज में औरत की तकरीम प्रकट होती है।

मेयर बावर (Bauer) साहिब ने कहा जमाअत अहमदिया से जब से मेरा परिचय हुआ है उसी दिन से जमाअत के आचरण तथा आदतों ने मुझ पर अच्छा प्रभाव छोड़ा है परन्तु अब जब मैं आपके ख़लीफ़ा से मिला हूँ तो मुझे आपकी जमाअत के आचरण के स्रोत का भी पता चला है कि इन आचरणों का उद्गम ऐसी लीडरशिप है जो आपकी सामूहिक तर्बीयत के पीछे काम कर रही है और मैं आप लोगों को ख़ुश-क़िस्मत समझता हूँ कि आपके इस तरह के सम्मान वाले और रोब वाले लीडर हैं जिन को प्रत्येक समय अपनी जमाअत की समाजी, अख़लाक़ी और रुहानी तर्बीयत का ध्यान रहता है। आप के ख़लीफ़ा से एक अजब किस्म की रुहानी कैफ़ीयत प्रकट होती है जिसको महसूस किया जा सकता है परन्तु शब्दों में इसका वर्णन नहीं कर सकता।

मेयर बरेंडड वेंगर साहिब ने कहा :आप के ख़लीफ़ा की तक़रीर बहुत ही प्रभावित करने वाली और अज्ञानता से बेदार करने वाली थी। यह बात वर्णन योग्य है कि उन्होंने अपनी तक़रीर में अन्य वक्ताओं की बातों का वर्णन किया। इस से प्रकट होता है कि वह दो तरफ़ की बातों को मानने वाले हैं और यदि लोग उनकी बातें सुनने आते हैं तो ख़लीफ़ा भी आने वालों को ग़ौर से सुनते और उनकी बातों को महत्त्व देते हैं। और इस बात से यह भी प्रकट होता है कि आप मेहमानों को किस तरह अनुकरणीय रंग में इज़्ज़त और सम्मान देते हैं। एक सामूहिक मुआशरती वार्तालाप के लिए यह बहुत प्रमुख भाग है जिस का इमाम जमाअत अहमदिया ने विशेष रूप से ध्यान रखा।

मेलानी लाडोग साहिबा ने कहा में रुहानी फ़िक्रों के बारे में तहक़ीक़ कर रही हूँ और मैंने रूहानियत पर अभ्यास करने की शिक्षा भी की है। अब मैं एक स्कूल में छात्र को रुहानी तबीब बना रही हूँ। जब इमाम जमाअत अहमदिया मेरे सामने से गुज़रे तो मैंने एक वीडियो बनाई परन्तु जब आपकी नज़र मुझ पर पड़ी तो मेरे जिस्म से सारी ताक़त निकल गई और मैं बिल्कुल जम कर रह गई। फिर जब ख़लीफ़ा ने दुआ करवाई तो मेरी आँखों में आँसू आ गए परन्तु मैंने पूरी कोशिश से अपने आप को सँभाला। ख़लीफ़ा की मौजूदगी से सारे माहौल में एक विशेष प्रभाव था जो दुनियावी और भौतिक नहीं बल्कि रुहानी था।

जोखिम टेगट माएर साहिब ने वर्णन किया :आप के ख़लीफ़ा ने उच्च आचरण अपनाने पर बात की और उनकी गुफ़्तगू का तरीक़ा ऐसा मुख़लिसाना, सहानुभूतिपूर्ण था कि मुझे यूं लगा कि इस बात को छोड़ते हुए कि हम कौन हैं और किस धर्म से सम्बन्ध रखते हैं, इन अख़लाक़ी और इन्सानी क़दरों के हवाले से हम सब एक ही हैं। इमाम जमाअत अहमदिया ने बड़ी वज़ाहत से बुरे और अच्छे का फ़र्क़ वर्णन किया और इस बात का ध्यान दिलाया कि हमें पड़ोसियों के अधिकारों का विचार रखना चाहिए और एक फ़ैमली की तरह रहना चाहीए। ख़लीफ़ा का वजूद ऐसा मालूम हो रहा था कि जिसमें किसी किस्म के सख्ती की शंका तक न थी और चलती फिरती मुहब्बत की तस्वीर थे। आपकी सच्चाई की दलील आपके तर्बीयत पाने वाले लोगों की जमाअत हैं, जिन से हमें दैनिक सम्बन्ध है।

मेयर जान इल्ज़े साहिब (Jan Ilse) ने वर्णन किया: आप के ख़िलफ़ा ने जिन बातों का वर्णन किया है वह हमारे माहौल और समाज में आम होनी चाहिऐं। हर धर्म की बुनियाद अमन है और आपके ख़लीफ़ा अपने व्यक्तित्व से भी एक अमन वाले व्यक्ति मालूम होते हैं और उनसे विनम्रता तथा विनय प्रकट होता है। ख़लीफ़ा एक सच्चे इन्सान हैं जिसने मुझ पर अपनी सच्चाई का गहरा प्रभाव डाला है।

फ्रेड रिश् गुंटुर साहिब (Friedrich Gunther)कहते हैं : ख़लीफ़ा एक खुले दिल तथा दिमाग के नफ़ीस तबा इन्सान हैं जिन की ज़ात में एक रुहानी प्रभाव और कशिश है। उनकी बातों को उनकी शख़्सी तक़दीस से दृढ़ता मिलती है। मैं अपने आप पर उनकी तक़रीर और व्यक्तित्व का बराबर प्रभाव महसूस कर रहा हूँ।

अयलके श्रीबर साहिबा (Elke Schrieber) कहती हैं: मैं ख़लीफ़ा की मौजूदगी से इतना प्रभावित हुई कि मेरा अपने आप दिल चाहा कि मैं इमाम जमाअत अहमदिया से बात करूँ, परन्तु मुझमें हिम्मत नहीं थी। मेरे टेबल पर बैठे हुए मरे अनुवादक ने मेरी मदद की और मुझे स्टेज पर लेकर गए। जब मैं ख़लीफ़ा के पास पहुंची तो मेरी टांगें काँप रही थीं परन्तु आपने मेरा हौसला बढ़ाया और मेरी बातें बहुत ग़ौर से सुनीं। मैंने उनसे कहा कि मैं बूढ़ी हूँ और मालूम नहीं कि ज़िन्दगी में दोबारा आपसे मुलाक़ात का अवसर मिले या नहीं इस लिए मैं स्टेज पर मिलने आई। उनकी दिलजोई मुझे हमेशा याद रहेगी।

मेवगन बर्ग साहिबा (Muggenburg) कहती हैं: ख़लीफ़ा एक बहुत ही दिलकश वजूद है और लोगों का समय के ख़लीफ़ा से प्यार स्पष्ट महसूस होता था। मुझे बहुत अच्छा लगा और प्रभावित हुई कि समय के ख़लीफ़ा ने बाक़ी वक्ताओं की बातें ग़ौर से सुनीं और नोटिस लिए। आजकल हर कोई केवल अपनी बातें प्रस्तुत करना चाहता है और दूसरों की बात ध्यान से सुनने का रिवाज नहीं और ख़ुदग़रज़ी का यह हाल है कि दूसरे की बात पर ध्यान ही नहीं दिया जाता। परन्तु ख़लीफ़ा ने दो तरफ़ा सम्मान और इज़्ज़त का अनुकरणीय इज़हार किया इस लिए धर्मों के मध्य बातों में ख़लीफ़ा को हमें उदाहरण समझना चाहिए।

ओलीवर साहिब (Oliver)ने पूछा कि क्या हुज़ूर केवल इस मस्जिद के उद्घाटन के लिए आए हैं? जब उन्हें बताया गया कि हुज़ूर अनवर ने दूसरी मस्जिदें का उद्घाटन भी किया है और हुज़ूर अनवर हर अहमदी से ज़ाती सम्बन्ध रखने की कोशिश करते हैं ख़त तथा पत्रों के बारे में तो वह बहुत हैरान होकर पूछते हैं कि हुज़ूर यह सब काम किस तरह करते हैं।

जब उन्होंने यह बात सुनी कि हुज़ूर अनवर ने Fulda में एक हदीस का ज़िक्र किया जिसमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक ईसाई वफ़द को मस्जिद में इबादत करने की आज्ञा दी तो उन्होंने अपनी इच्छा का इज़हार किया कि मैं भी आपकी मस्जिद में इबादत के लिए आऊँगा।

स्थानीय शहरी अलरशि लेन्ज़ साहिब (Ulrich Lenz) ने कहा: मैं जमाअत को 30 साल से जानता हूँ और अभी तक सब कुछ ही इस जमाअत के बारे में अच्छा लगा है। इमाम जमाअत अहमदिया का वजूद बहुत शानदार और प्रभावित करने वाला है परन्तु उनका रोब और शान एक सन्तोष और मुहब्बत अपने साथ रखती

पृष्ठ 1 का शेष

हैं उल्मा हैं या सोफिया हैं वे भी धर्म की बातों से उपहास कर लेते हैं कहीं बिना अवसर के क़ुरआन की आयत पढ़ देंगे कहीं हंसी के अवसर पर हदीस नब्वी पढ़ देंगे हालाँकि अल्लाह और उसके रसूल का मुक़ाम बहुत उच्च है उनकी बातों को हंसी और उपहास के अवसर पर वर्णन करना बहुत ख़तरनाक बात है यह चीज़ दिल को काला कर देती, रूहानियत को मार देती और तक़्वा को कुचल देती है। इस गुनाह पर ग़ालिब आने के लिए किसी बड़ी मेहनत की भी ज़रूरत नहीं। किसी लालच को दबाने का यहां सवाल नहीं। एक मामूली से ध्यान की ज़रूरत है जिन लोगों में यह बीमारी पाई जाती है वह एक थोड़ी से ध्यान से इस कमी को दूर कर सकते हैं और थोड़ी सी मेहनत के साथ दिल का एक ऐसा सुधार कर सकते हैं जो उन को बड़े बड़े कामों के लिए तैयार कर दे।

अत: ख़ुदा की बातों और उस के रसूल की बातों में हंसी और मज़ाक़ को बिल्कुल छोड़ दे गुनाह बे-लज़्ज़त है और इन्सानी दिल को बिलकुल मुर्दा कर देता है ख़ुदा और उस के रसूल का वर्णन जब भी आए उस के साथ दिल में भय पैदा होनी चाहिए जिससे मुहब्बत होती है उसका वर्णन कभी भी ध्यान खींचे बिना नहीं रहता। अपने माँ बाप से कोई व्यक्ति उपहास नहीं करता। अपने माँ की बातों से कोई व्यक्ति उपहास नहीं करता फिर क्यों ख़ुदा और रसूल की बातों को हंसी के अवसर पर प्रयोग किया जाए क्यों ख़ुदा और रसूल के नाम को उपहास के तौर पर प्रयोग किया जाए और एक सैकण्ड के मज़ाक़ के लिए उम्र-भर की इबादत को नष्ट कर दिया जाए। اَلْحَذَرَ ثُمَّ الْحَذَرَ

(तफ़सीरे कबीर, भाग 1 पृष्ठ 469 से 470 प्रकाशन कादियान 2010 ई)

☆ ☆ ☆ ☆

है। उनकी मौजूदगी भी अमन और मुहब्बत का असर डालती है और हर धर्म का उद्देश्य सबके लिए अमन ही होता है।

कैनल साहिबा Canel) जो भूतपूर्व मेंबर पार्लियामेंट हैं, कहती हैं कि इमाम जमाअत जमाअत अहमदिया का ख़िताब बहुत अच्छा था और मुआशरती प्रबन्ध की परिभाषा जो आपने फ़रमाई है वह सारगर्भित , हक़ायक़ पर आधारित और बिल्कुल ठीक है।

स्टीफ़ान लेसफ़ील्ड साहिब (Stefan Lehsfeld) ने कहा कि इमाम जमाअत अहमदिया एक निहायत हाज़िर दिमाग़ और उपकार करने वाले व्यक्ति हैं और आपका ख़िताब उत्तम और क़ौमों के मध्य वर्तमान हालात पर पर उनकी गहरी और हक़ीक़त पसन्द नज़र को प्रकट करता था।

फेलिक्स कोक साहिब (Felix Kuck) ने कहा : इमाम जमाअत अहमदिया बहुत पढ़े लिखे व्यक्ति हैं , उनसे मिलकर महसूस होता है कि आप क़ौमों के बीच के मामलों पर गहरी नज़र रखने वाले एक सम्मान वाले इन्सान हैं। आप धर्मों के मध्य रास्तों को खोलने , आपस में शंकाओं को मिटाने के लिए वास्तविक दिलचस्पी रखते हैं और क़ौमों के मध्य और धर्मों के मध्य वार्तालाप के लिए साकरात्मक माहौल के बढ़ावा और मज़बूती में व्यस्त नज़र आते हैं।

Wolfgang Merkmann साहिब ने कहा मुझे हुज़ूर का वजूद इस तरह महसूस हुआ कि आपको दुनिया की कोई भी ताक़त , इस्लाम के अमन के पैग़ाम को फैलाने से , नहीं रोक सकती। आप सुदृढ़ और मज़बूत व्यक्तित्व हैं और आपके तर्कों की बुनियाद इन्सानियत के लिए सच्ची हमदर्दी और इन्सानी क़दरों की स्थापना के लिए नि:स्सवार्थ कोशिशों पर है। कौन है जो ऐसे ताक़तवर, पवित्र और मुख़लिस इन्सान की कोशिशों को रोक सके।

☆ ☆ ☆ ☆

(शेष.....)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 3 December 2020 Issue No.49

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

पृष्ठ 1 का शेष

इसके अतिरिक्त एक और दलील ख़ुदा तआला ने इस ज़माना की वास्तविकता को समझाने के लिए पेश की है और वह अंबिया अलैहिमुस्सालम के कहरी (प्रकोप वाले) चमत्कार हैं जिनसे एक-एक वक़्त दुनिया के तख़्ते उलट गए। और सृष्टि का नामो निशान तक लगभग मिट गया है। इन्सान ख़ुदा तआला के क़हर के हाथ में है। जब चाहे वह फना कर दे। फिर उसको और दलील के रूप में प्रस्तुत किया है कि कई बीमारियां इस भयानकता और तेज़ी से फैलती हैं कि जिन्होंने उनका समय देखा होगा वह कह सकते हैं कि क़यामत ही का नमूना होता है उन प्रचण्ड बीमारियों में से एक ताऊन भी है जो इस समय हमारे देश में पड़ी हुई है। जिस ने कराची, बंबई में बहुत कुछ सफ़ाई कर दी है। और पहाड़ पर भी पालमपुर से और कलकत्ता से भी ताऊन की भयावह ख़बरें प्राप्त हुई हैं। अत: एक बड़ा भारी ख़तरा है जो इस वक़्त सामने है। और इस तक़रीर के वर्णन करने से यह उद्देश्य है कि चूँकि इन्सान को बड़ी बड़ी परीक्षाएं आती रहती हैं। जैसा ख़ुद अल्लाह तआला फ़रमाता है।وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ (अलबकर:156) हम तुम्हें आज़माते रहेंगे कभी डर से और कभी मालों में नुक़्सान करने से और कभी फलों को नष्ट करने से।

अतलाफे समरात (फलों के नष्ट करने) से अभिप्राय

अतलाफे समरात से अभिप्राय तफ़सीरों में औलाद भी लिखी है। और इस में कोशिशों का नष्ट होना भी शामिल है। जैसे ज्ञान को प्राप्त करने की कोशिश, व्यापार में सफलता की कोशिश, ज़मींदारी की कोशिश। अत: इन कोशिशों का नष्ट होना बड़ी मुसीबत होती है। प्रत्येक समय इन्सान को ख़्याल होता है कि सफल हो जाऊँगा। आख़िर ख़ुदा तआला के इल्म में उनकी मस्लिहत की मांग यही होती है कि वह असफल रहे, या खेती नहीं लगती, या व्यापार में सफल नहीं होते।

ताऊन एक कहरी निशान

इस आयत से पता चलता है कि अल्लाह तआला ने चार परीक्षाएं रखी हैं। एक ख़ौफ़, द्वितीय कभी माल का नुकसान और तीसरे जान का नुकसान चौथा समरात की हानि। परन्तु यह एक भयावह और भयानक स्थान है कि इस ताऊन में यह हर चार परीक्षाएं सामूहिक तौर पर इकट्ठे हो गए हैं। जिनको यह ख़बर है कि इस वक़्त क्या हो रहा है। और क्या भुगतना पड़ता है। ताऊन के होने की हक़ीक़त में ये चारों परीक्षाएं एक के बाद दूसरी सम्मुख आ जाती हैं। यही नहीं कि आदमी मर जाता है गर्वनमेंट इंग्लिशिया ने एक ज़रूरत और बहुत ज़रूरतों के कारण से और फिर ऐसी मस्लिहत और ज़रूरत से जैसे मेहरबान माँ को अपने बच्चों के लालन पालन और निगरानी में कभी कभी पेश आ जाती है। यह क़ानून पास किया है कि जिस घर में ताऊन की घटना हो। उस घर के रहने वाले बाहर निकाल दिए जाएं और ज़रूरत के समय पड़ोसी और मुहल्ले वाले और बहुत ज़रूरत की अवस्था में गांव का गांव ही ख़ाली कर दिया जाए। बीमार अलग रखे जाएं और तंदरुस्त अलग रखे जाएं। और वह स्थान जहां ऐसे लोग रखे जाएं हल्की हवा में ऐसे स्थान पर हो जिस के नीचे पानी न हो। और बहुत आना जाना हो सके। और इसके साथ ही क़ब्रिस्तान भी हो ताकि मरने वालों को जल्दी दफ़न कर सकें। ताकि ऐसा न हो कि उनकी बदबू से हवा और ज़हरीली हो। यह एक ऐसा बड़ी परीक्षा है जिसके कारण से बंबई, पूना और कई अन्य स्थानों इत्यादि में लोगों ने ठोकर खाई है। अत: गर्वनमेंट ने इन उपायों के धारण करने से जो नेकी सोची है और वास्तव में इस में नेकी ही है। इस को बुराई क़रार दिया जाता है। यह खेद और बहुत खेद की बात है कि जिससे नेकी की जाए वह इस नेकी को बुराई समझता है। फिर इस पर हैरत और आश्चर्य तो यह है कि गर्वनमेंट ने रोकथाम के उपाय कुछ अपने घर से नहीं तैय्यार कर लिए हैं। यूनानी तबीबों की इस पर सहमति हुई है कि ताऊन जिस घर में हो वह इस घर बल्कि शहर बल्कि देश तक को साफ़ कर देती है। इस के बहुत से उदाहरण भी इस गिरोह ने दिए हैं कि ताऊन जैसी ख़ौफ़नाक बीमारी ने बस नहीं किया जब तक कि आबादी से जंगल नहीं बना दिया और उजाड़ करके नहीं दिखा दिया। प्राय लोगों को ख़बर नहीं है। मुझे अफ़सोस है कि बावजूद यह कि यह ख़तरनाक बीमारी बहुत बुरी तरह फैल रही है और देश के एक बड़े हिस्सा को तबाह कर देने की धमकी दे रही है परन्तु मैं नहीं देखता कि लोगों को एक खा जाने वाला ग़म पैदा हुआ है जिस के कारण से वे तौब: और इस्तिग़फ़ार में व्यस्त हों। मैं नहीं देखता कि वह ख़ुदा तआला के समक्ष रोना धोना करते हों या नमाज़ों की नियमित पाबन्दी करते हों। बल्कि ज़ुल्म और बुरे आचरण के तरीक़े इस्तिमाल में आ रहे हैं। ताऊन का नियम है कि वह लम्बी उड़ान भर के परिंदे की तरह दूसरे स्थान में पहुँचती है। इस की रफतार में ऐसा निज़ाम नहीं है कि एक मंज़िल से दूसरी मंज़िल जाए बल्कि दो-चार सौ कोस का फ़ासिला तय करके एक दम जा पहुंचती है।

अब बंबई और जालंधर के ही बार में ख़्याल करो कि उनमें कितनी दूरी है। अब बतलाओ कि इन्सान उस के जालंधर में पहुंचने के बारे में क्या धीमी रफतार की कल्पना कर सकता है। अत: उसकी रफतार के बारे में कोई कुछ नहीं कह सकता। आज सुरक्षित गुज़रती है कल क्या हो। यह ख़तरनाक बात है। इसके दौरे बड़े लंबे होते हैं। कई बार साठ-साठ साल तक उसका दौरा होता है और यह एक प्रमाणिक और स्वीकृत बात है। हैज़ा की तरह नहीं कि सावन भादों के महीने में आ गया और बीस पच्चीस दिन रह कर विदा हुआ। ताऊन को हकीमों ने नेज़े से मारने वाली लिखा है। ताऊन अतिशयोक्ति की विभक्ति है जिसका निशाना खाली नहीं जाता। और प्राय मौतें होती हैं। तौरात में भी इस का वर्णन है। मूसा अलैहिस्सलाम के समय में यहूदियों पर पड़ी थी। तौरात में ख़ुदा ने जहां फोड़ों की मार से डराया है इससे ताऊन ही अभिप्राय है। क़ुरआन करीम में भी यहूदियों को ना-फ़रमानी पर ताऊन से हलाक करने का वर्णन है।

ताऊन आने के कारण

तौरात और क़ुरआन करीम के इन स्थानों पर ग़ौर करने से पता लगता है कि यह इन्सान की ना-फ़रमानी और बुरे कामों से सम्बन्ध रखती है। क्योंकि अल्लाह तआला की आदत से यही मालूम होता है कि पाप के वक़्त इसी बीमारी से हलाक हुए। यह ख़ुदा तआला का एक कहरी निशान है। जैसा मैंने पहले वर्णन किया कि यह तीसरा क़ियामत का चिन्ह है इससे क़यामते सुग़रा पैदा होती है। शायद वे लोग जिन को ख़बर नहीं इसको अफ़साना समझें कि यूरोप और शाम के इलाक़ा में और इराक़, अजम में तो मानो उसका डेरा जम गया था। अभी यहां नया मुसाफ़िर है इस लिए लोगों को इसके आचरण और आदतों की ख़बर नहीं। एक तरफ़ तो वह ख़ुदा से बे-ख़ौफ़ और बे-ख़बर हैं और इस्तिग़फ़ार नहीं करते। दूसरी तरफ़ गर्वनमेंट के उपायों पर भी तो अनुकरण नहीं करते। और उनको कुधारणा की नज़र से देखते हैं। और विरोध का शोर मचाते हैं। मैं सच सच कहता हूँ चापलूसी के तौर पर प्रशंसा करना हमारा काम नहीं ये उसूल कि जिस गांव में बीमारी हो। वहां के लोग अलग किए जाएं और आने जाने के रास्ते बंद किए जाते हैं। और मरीज़ों को एक खुले मैदान में रखा जाता है और कई बार सारे गांव को अलग कर दिया जाता है मानो इस सर ज़मीन से सबको निकाल दिया जाता है हमारी किताबों से मालूम होता है और तौरात से भी यही पता लगता है कि इसका मवाद ज़मीन से ही शुरू होता है। यह ख़्याल किया जाता है कि यह बीमारी चूहों से फैलती है। यह भी इस के वर्णन किए गए अन्य कारणों में एक कारण है। वास्तव में जो ज़मीन बुरे कामों और कुक्रमों से लानती ज़मीन हो जाती है इस में यह गर्मी पैदा हो जाती है और बड़े बड़े ख़ौफ़नाक तरीक़ पर वे अज़ाब में पीड़ित हो जाती है। परन्तु कोई हम को यह तो बतलाए कि गर्वनमेंट ने क्या बुराई की जो यह कहा कि बीमारी वाले मकान को छोड़ दो। जो काम हमारी भलाई के लिए हो इस में बुराई का ख़्याल पैदा करना बुद्धिमान इन्सान का काम नहीं। मैंने जैसा कहा है कि यदि गर्वनमेंट यह आदेश दे दे कि कोई न निकले तो लोग इस हुक्म को इससे भी ज़्यादा बुरा समझें। क्योंकि जब गांव में ताऊन फैले और लोग मरने लगें तो कोई भी बर्दाश्त न करेगा कि इस घर में रहे। देखो जिस घर या मकान से कभी साँप निकले लोग दहश्त खाते हैं। चाहे वह साँप मार भी दिया जाए। फिर भी अंधेरे में इस मकान के अंदर दाख़िल नहीं होते। यह इन्सान की एक कुदरती आदत है। आश्चर्य है कि इन्सान अंदेशा के स्थान से परिचित हो और फिर अमन और चैन के साथ उस में रहे। क्या हो सकता है कि जिस घर से मुर्दा पर मुर्दा निकलना शुरू हो जाए और घरवाले इस में बैठे रहें? शीघ्र ख़ुद ही छोड़ेंगे और उसे मनहूस बता कर अलग हो जाऐंगे। यदि ये लोग इसी हालत में छोड़े जाते और गर्वनमेंट किसी प्रकार का दख़ल न देती फिर भी ये लोग वही करते जो आज गर्वनमेंट कर रही है। असल बात यह है कि लोगों को ताऊन की ख़बर नहीं। वह इस को नज़ला, ज़ुकाम की तरह एक साधारण बीमारी सोचते हैं।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 225 से 231 प्रकाशन 2008 क़ादियान)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad